19 ग्रामीण-नगरीय उपान्त (Rural-Urban Fringe)

शब्द की उत्पत्ति (Origin of the Term)

ग्रामीण-नगरीय उपान्त दो शब्दों से मिलकर बना है—**ग्रामीण उपान्त** (Rural fringe) और **नगरीय उपान्त** (Urban fringe)। यह दोनों अतिक्रमण (Encroachment) वाले एक ऐसे क्षेत्र को बताते हैं, जो स्वरूप व कार्य दोनों दृष्टि से भिन्नता रखता है। उपान्त शब्द स्वयं ग्रामीण व नगरीय क्षेत्र के बीच एक सीमा रेखा का प्रतीक स्वरूप है। यह वास्तव में नगरीय क्षेत्रों की सीमा पर फैला होता है, जो नगर को घेरे होता है और वास्तविक देहाती क्षेत्र से इसे अलग करता है। अनेक शोधकर्ताओं ने इस शब्द को परिभाषित किया है तथा उपान्त से मिलते-जुलते क्षेत्र में भिन्नता स्थापित करते हुए अनेक नामों का प्रयोग किया है। 1958 में **कुर्रज** और **फ्लिटचर** ने उपान्त और उपनगर में अन्तर स्थापित किया। 1961 में विसिंक ने उपान्त (Fringe), उपनगर (Suburb), आभासी-उपनगर (Pseudo-suburb), अनुषंगी, आभासी-अनुषंगी (Pseudo-satellite) शब्दों के प्रयोग व उनमें अन्तर स्थापित किया है। इनके अलावा उपान्त से मिलते-जुलते क्षेत्र के लिए बहिर्वर्ती संलग्न क्षेत्र, उपनगरीय क्षेत्र, विस्तारित उपान्त आदि शब्दों का भी प्रयोग किया है।

अध्ययन (Studies)

वर्तमान समय में ग्रामीण-नगरीय उपान्त के अध्ययन का महत्त्व काफी बढ़ गया है। नगरीय भूगोल, समाजशास्त्र, भूमि-अर्थशास्त्र, नगर प्रशासन प्रबन्ध एवं नियोजन आदि सभी विषयों के शोधकर्ताओं का ध्यान इसकी ओर आकर्षित हुआ है। आधुनिक नगर तेजी के साथ अपने आकार में वृद्धि कर रहे हैं। वे अपनी प्रशासकीय सीमा से बाहर प्रमुख मार्गों के किनारे-किनारे बराबर फैलते जा रहे हैं। इस विस्तार ने अनेक समस्याएँ पैदा कर दी हैं। इसने नगरवासियों के सामाजिक-आर्थिक ढाँचे व नगरीय भूमि उपयोग को प्रभावित करने के साथ-साथ समीपवर्ती ग्रामीण क्षेत्रों के ऊपर भी प्रभाव डाला है। इन सब बातों का अध्ययन नगरीय समस्याओं को समझने व हल करने के लिए बड़ा महत्त्वपूर्ण है। वास्तव में उपान्त ऐसी पेटी है जिस पर विद्वानों ने पिछले वर्षों में अधिक ध्यान नहीं दिया है। यह पेटी जहाँ एक ओर

Scanned with CamScanner

नगर के विस्तार की सघनता से पीड़ित होती है, वहीं दूसरी ओर ग्रामीण भूमि का शोषण करती है। जिसके अध्ययन की ओर न तो नगरीय भूगोलवेत्ताओं का ध्यान गया है और न ग्रामीण भूगोलवेत्ताओं का। दोनों शाखाओं के विद्वान् मिलकर ही इस पेटी की जटिल समस्याओं को सुलझा सकते हैं।

अध्ययन का महत्त्व (Importance of the Study)

पहले समय में नगर कम घने बसे थे। उनका विस्तार क्षैतिज दृष्टि से अधिक नहीं हुआ था तथा नगर को चारों ओर से घेरने वाली ग्रामीण भूमि स्पष्टतः पहचान में आ जाती थी। रेल व सड़क मार्गों के विकास के फलस्वरूप नगर अपना प्रभाव निर्धारित सीमा के भीतर सीमित नहीं रख पाये। वे इस सीमा से आगे अपने नगरीय कार्यों का विस्तार करने लगे। ये नगरीय कार्य ग्रामीण भूमि का अपहरण करते हैं तथा ग्रामीण कार्य-कलापों के साथ-साथ फैलते जाते हैं। इस प्रकार नगर की सीमा के बाहर एक ऐसा क्षेत्र विकसित हो जाता है जो ग्रामीण व नगरीय दोनों ही विशेषताएँ एक साथ रखता है। इस पेटी को ग्रामीण-नगरीय संक्रमण उपान्त कहते हैं। यह नगर की सीमा के बाहर उसी तरह फैली होती है, जैसे कि मुख्य वस्त्र से आगे बढ़ी हुई झालर।

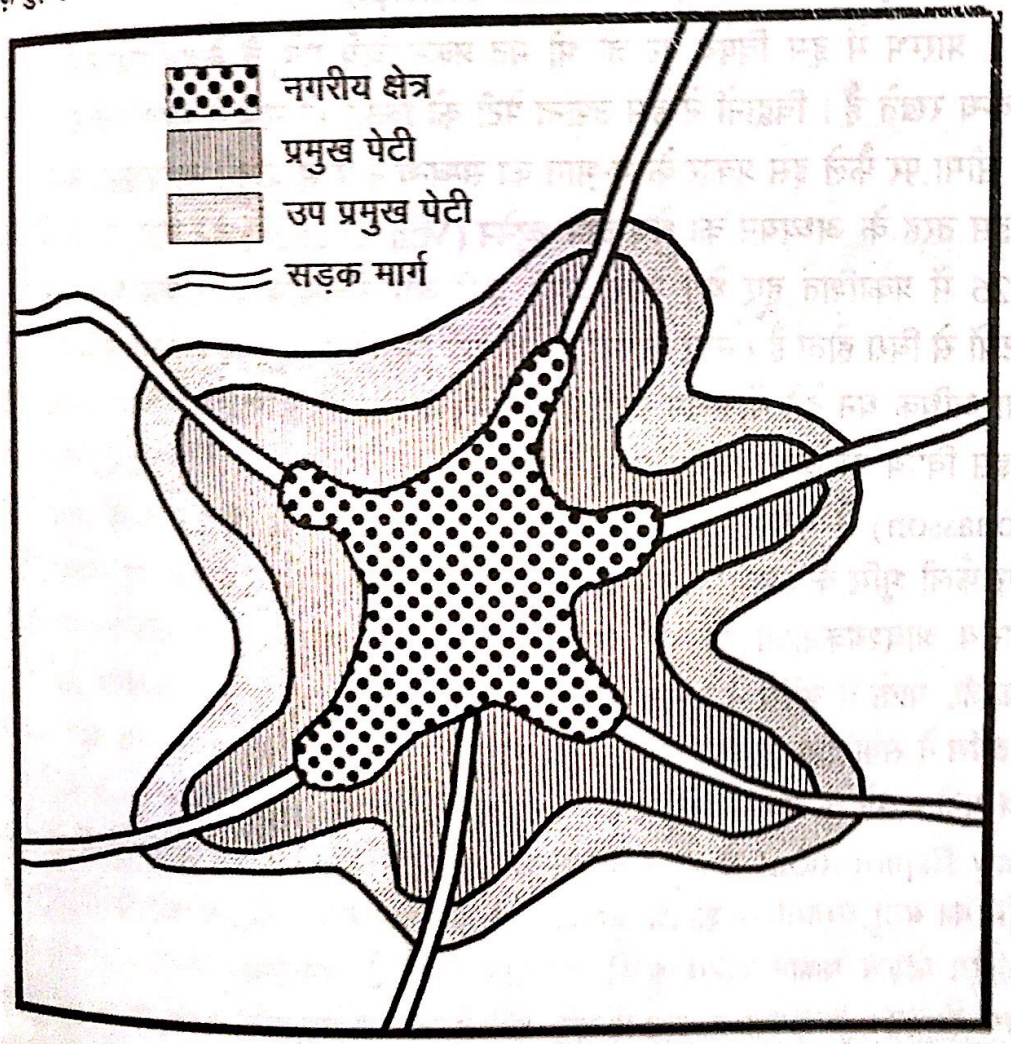

चित्र 19.1 : ग्रामीण—नगरीय उपान्त

Scanned with CamScanner

उन्नीसवीं शताब्दी के अर्द्धभाग में रेलमार्गों का विकास होने से नगर अपना आकार बढ़ाने लगे। वास्तव में यह वृद्धि नगर से बाहर जाने वाले रेल व सड़क मार्गों के किनारे-किनारे देखने में आने लगी। जैसे-जैसे इस क्षेत्र के लोगों को उपयोगी सेवाएँ, जैसे विद्युत, पीने का पानी, गैस, सीवरेज सुविधाएँ मिलने लगीं। जैसे-जैसे यहाँ पर नगरीय विस्तार होता गया तथा नगर सड़क व रेल मार्गों के सहारे-सहारे इस प्रकार बढ़ते गये कि उन्होंने तारकार रूप ग्रहण कर लिया (चित्र 19.1)। इन यातायात मार्गों पर माला में पुरे दानों की भाँति जनसंख्या का भारी जमाव हो गया। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम वर्षों व बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों में अमरीका व यूरोप में विद्युत रेल-मार्गों, बस, मोटर, ट्रक यातायात का विकास होने से नगरों के विस्तार को बहुत बल मिला। इसने नगरों को एक-दूसरे के समीप लाने के साथ-साथ नगरीय बस्ती को भी अपने समीपवर्ती ग्रामीण क्षेत्रों के समीप ला दिया। काम करने के स्थानों व रहने के स्थानों के बीच तेज यातायात सुविधा बढ़ने से नगर अपनी सीमा से बाहर की ओर फैलने लगे और कहीं तो शयनागार उपनगरों की स्थापना भी हो गयी। ये शयनागार उपनगर और समीपवर्ती नगर-वृद्धि का क्षेत्र केन्द्रीय नगर की मजबूत पकड़ में होते हैं व उस पर पूर्ण आश्रित होते हैं।

अभिमत एवं संकल्पना (Views and Concept)

प्रारम्भ में इस विषय पर जो भी मत प्रकट किये गये, वे केवल एक नगर से अपना सम्बन्ध रखते हैं। विद्वानों ने इस उपान्त पेटी को किसी भी नाम से सम्बोधित न करके नगर की सीमा पर फैले इस प्रकार के भू-भाग का सम्बन्ध नगर से जोड़ने का प्रयास किया। प्रारम्भ में इस तरह के अध्ययन का श्रेय **वान थ्यूनेन** (Von Thunen) को जाता है जिसके विचार 1826 में प्रकाशित हुए थे। नगर अपने चारों ओर संकेन्द्रीय वलयाकार भूमि उपयोग की पेटियों से घिरा होता है। नगर के समीप वही पेटी मिलती है जो नगर के लिए अधिक महत्त्वपूर्ण तथा अधिक धन देने में सक्षम होती है। थ्यूनेन के विचारों के बाद काफी समय तक विद्वानों ने इस विषय पर अपने विचार प्रकट नहीं किये। लगभग 100 वर्षों बाद 1925 में **जोनासन** (Jonasson) ने यूरोपीय नगरों के बारे में अपने विचार प्रकट किये। उसने नगरों के चारों ओर फैली भूमि के उपयोग पर सिद्धान्त प्रतिपादित करते हुए बताया कि यह समीपवर्ती भूमि नगरीय आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। 1925 में अनेक समाजशास्त्रियों जैसे **डगलस, मैकेन्जी, पार्क** व **बर्गेस** ने उपान्त पेटी से सम्बन्धित कुछ समस्याओं पर प्रकाश डाला। **पार्क** व **बर्गेस** ने संकेन्द्रीय विकास सिद्धान्त का प्रतिपादन किया तथा बताया कि नगर का समीपवर्ती क्षेत्र धनी लोगों के मकानों को आकर्षित करता है। **मैकाये** (Mackaye) ने 1928 में 'The New Exploration' में प्रथम बार बताया कि नगर अपनी सीमा पर फैली सतत् ग्रामीण भूमि का बड़ी बेरहमी से शोषण करते हैं। वे यहाँ पर बंगला, गोदाम, कारखानों, बिल-बोर्ड, फिलिंग स्टेशन, मकान, रेस्टारेण्ट की स्थापना कर लेते हैं। इन सबकी स्थापना इस भूभाग के दृश्य को इतना विकराल व भयावह बना देती है कि यह क्षेत्र गन्दी बस्ती के रूप में दिखाई देता है। उसने इसे महानगरीय आक्रमण (Metropolitan Invasion) का नाम दिया है।

Scanned with CamScanner

1930-40 के दशक में विद्वानों ने ग्रामीण-नगरीय उपान्त पर ध्यान न देकर नगरों के विकास के सामान्य प्रारूप पर ही अपना ध्यान केन्द्रित रखा। 1933 में **क्रिस्टालर** ने केन्द्रीय स्थान सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। उसने एक समान स्थलाकृति वाले क्षेत्र में बस्तियों के समान वितरण पर प्रकाश डाला। उनका पदानुक्रम निर्धारित करके पारस्परिक दूरियों को भी बताया तथा उनके सेवा क्षेत्र का आकार षट्कोणीय बताया। प्रत्येक बस्ती अपने चारों ओर फैली ग्रामीण भूमि से अपनी आवश्यकता पूरी करती है। केन्द्रीय नगर अपने चारों ओर फैले सीमावर्ती भू-भाग पर विस्तार कर लेते हैं। 1933 में **होमर हायट** (Homer Hoyt) ने नगर के विकास का सेक्टर सिद्धान्त प्रस्तुत किया। इस भूमि-अर्थशास्त्री ने बताया कि नगर की सीमा पर ग्रामीण व नगरीय भूमि उपयोग की विशेषता यातायात सुविधाओं के विकास के कारण दिखाई देती है। इस सुविधा ने नगर के भौतिक विकास को प्रोत्साहित किया है। इसी वर्ष **मैकेन्जी** (Mckenzie) नामक समाजशास्त्री ने नगर के सीमावर्ती भाग पर उसके भौतिक विकास पर प्रकाश डाला। **कोल्बी** (Colby) नामक समाजशास्त्री ने नगरीय भूगोल में केन्द्रोन्मुखी व केन्द्र-अभिमुखी शक्तियों के ऊपर अमरीकी भूगोल पत्रिका में एक लेख प्रस्तुत किया तथा बताया कि नगर अपने समीपवर्ती भाग का शोषण इन शक्तियों के प्रभाव से करते हैं।

1937 में **टी० एल० स्मिथ** (T.L. Smith) नामक समाजशास्त्री ने सर्वप्रथम नगरीय उपान्त (Urban fringe) शब्द का प्रयोग किया व उससे सम्बन्धित समस्याओं का विशेष रूप से उल्लेख किया। नगर की प्रशासकीय सीमा के बाहर निर्मित क्षेत्र को नगरीय उपान्त का नाम दिया तथा बताया कि इस भूभाग में अनेक प्रकार के संस्थानों जैसे रात्रि व टूरिस्ट कैम्पों, फिलिंग स्टेशन, रिहाइशी इमारतों की स्थापना सड़कों के सहारे-सहारे होती हुई मिलती है। उसने लूसियाना की जनसंख्या पर लेख प्रस्तुत करते हुए उपान्त की जनसंख्या व उससे सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन किया। इस क्षेत्र के भौगोलिक पहलुओं पर प्रकाश डालने में असमर्थ रहा। 1940 में **साल्टर** (Saltor) महोदय ने उपान्त पेटी को प्रथम बार परिभाषित व वर्गीकृत करते हुए बताया कि– 'यह पेटी नगरीय व ग्रामीण भूमि उपयोग का मिश्रित रूप है तथा नगर के बाहर फैली यह पेटी भूमि उपयोग की विशेषताओं के आधार पर कई वर्गों में बाँटी जा सकती है। यह पेटी गम्भीर व जटिल समस्याओं से ग्रसित होती है जिनके निदान के लिए उचित नियोजन की आवश्यकता होती है।[1] 1945 में **बाल्क** (Balk) ने उस उपान्त को नगरीकरण (Urbanisation) का क्षेत्र बताते हुए कहा कि इसके विकास के लिए एकमात्र उत्तरदायी तत्त्व अभिगम्यता होती है।

---

1. He defined Urban fringe as a mixture of landuses, rural and urban and classified it into a series of belts surrounding the city by the analysis of landuse characteristics. Such area is full of serious and complex problems and needs proper planning for solution. —Saltor

Scanned with CamScanner

1940 के बाद अमरीका में उपान्त से सम्बन्धित समस्याओं ने विद्वानों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। 1942 में **वेहरवीन** (Wehrwein) ने इस विषय पर अपने महत्त्वपूर्ण विचार प्रकट किये जो आज भी महत्त्व रखते हैं। उन्होंने उपान्त या मध्यवर्ती पेटियाँ तीन प्रकार की बतायी हैं—

(i) कृषित व चरागाह प्रदेश के बीच कम उपजाऊ भूमि की पेटी,

(ii) वनों व खेतों के बीच कटओवर्स की पेटी, तथा

(iii) खेतों व नगर के बीच उपनगरीय पेटी।

इन तीनों प्रकार की पेटियों में तीसरे प्रकार की पेटी ग्रामीण भूमि को अर्द्धविकसित नगरीय भूमि उपयोग के अन्तर्गत जबरदस्ती खींच लेती है। इस प्रकार से यह पेटी ग्रामीण भूमि का अपहरण करती है। इसको **आर० एल० सिंह** (R.L. Singh) ने नगरीय कटाव की संज्ञा दी है। **वेहरवीन** ने इस पेटी के सुसंगठित नियोजन, निर्देशन व नियन्त्रण की आवश्यकता पर बल दिया है। 1960 में रुसवर्म (Russwarm) ने नगर और देहात के बीच असतत् रूप से फैले सीमान्त क्षेत्र को उपान्त का नाम दिया है। 1962 में **जी० ए० विसिंग** (G.A. Wisink) ने भूमि उपयोग के सन्दर्भ में इस क्षेत्र को भारी विभिन्ताओं का क्षेत्र 'An Area of Great Differentiation' माना है। 1960 में **आर० जी० गोलेज** (R. G. Gollege) ने इस पेटी को भौगोलिक भूमि कहकर पुकारा है जो मानव की भूमि नहीं होती है। इन्होंने आस्ट्रेलिया के सिड़नी नगर की ग्रामीण-नगरीय उपान्त का अध्ययन किया है तथा अपने विचारों को 'आस्ट्रेलियन ज्योग्राफर' में प्रकाशित कराया है। उनके विचार इतने महत्त्वपूर्ण हैं कि वह केवल आस्ट्रेलियन नगरों के बारे में ही नहीं बताते बल्कि विश्व की बड़े-बड़े नगरों की उपान्त पेटी के बारे में भी जानकारी देते हैं। 1964 में **जे० बस्ती** (J. Basti) ने पेरिस के समीपवर्ती भाग का मानचित्र दिया है जिससे सार्वजनिक सेवाएँ उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में नगर के घने बसे क्षेत्र के बाहरी भागों में फैल गयी हैं।

परिभाषाएँ (Definitions)

ग्रामीण-नगरीय उपान्त को परिभाषित करने का प्रयास अनेक विदेशी एवं भारतीय विद्वानों ने किया है। इन्होंने अपने-अपने अध्ययनों में नगरों के उपान्त की विशेषताओं का अध्ययन करते हुए ही यह प्रयास किया है। यह ग्रामीण-नगरीय उपान्त नगर के लगातार निर्मित फैले क्षेत्र और ग्रामीण पृष्ठ प्रदेश के बीच फैले भू-भाग पर विस्तृत होता है। **जी० एस० वेहरवीन** के अनुसार, "ग्रामीण नगरीय उपान्त यह अन्तर्वर्ती क्षेत्र है, जो सुस्पष्ट नगरीय भूमि उपयोगों और कृषि में लगे क्षेत्र के बीच फैला रहता है।'[2] उनका कहना है कि उपान्त ग्रामीण भूमि के नगरीय कटाव का नाम है। यह ग्रामीण भूमि पर विस्तार रखता है, जिसे नगरीय कार्यों द्वारा उँगलीनुमा भूमि उपयोग के खण्डों में छेद दिया जाता है और नगर ताराकार रूप ग्रहण कर

2. 'The Rural-urban fringe may be defined as the area of transition between well-recognized urban landuses and the area devoted to agriculture'
—G.S. Wehrwein

Scanned with CamScanner

लेते हैं। **रिचार्ड आर० मेयर्स** और **जे० ए० बीगले** ने उपान्त को नगर और उसके देहात के बीच का भू-भाग माना है।[3] **आर० ई० डिकिन्सन** के अनुसार नगर की बाहरी सीमा पर, नगरीय व ग्रामीण भूमि उपयोग के बीच के क्षेत्र में एक मध्यवर्ती क्षेत्र पाया जाता है जो दोनों की विशेषताएँ रखने वाला होता है, तथा नगरीय प्रसार से पीड़ित रहता है।[4] उनका कहना है कि यह ग्रामीण भूभाग होता है जहाँ रिहाइशी विकास, नये उद्योगों की स्थापना तथा भूमि का अन्य नगरीय कार्यों में उपयोग होता मिलता है। यहाँ विकास की प्रक्रिया बराबर जारी रहती है। यह विकास प्रमुख रूप से परिवहन मार्गों के किनारे-किनारे होता है। बाद में धीरे-धीरे छोटे कस्बों व गाँवों के चारों ओर इसका विस्तार होने लगता है। **रिचार्ड बी० एन्ड्रयूज** के अनुसार, ग्रामीण-नगरीय उपान्त नगर की बाहरी सीमा पर फैला होता है, जिसे इसकी आंतरिक सीमा स्पर्श करती है। यह कृषि भूमि उपयोग के साथ-साथ नगरीय भूमि उपयोग की विशेषताएँ रखने वाला परस्पर मिश्रित क्षेत्र होता है।'[5]

लेविस कीबले—'नगरीय उपान्त नगर को चारों ओर से घेरने वाली भूमि को कहते हैं, जो कि नगर का अंग नहीं मानी जाती है, लेकिन जिसका प्रयोग नगर द्वारा अपने महत्त्वपूर्ण कार्यों के लिए किया जाता है।'[6]

गार्नियर एवं चेबोट—'यह उपान्त एक उपनगरीय क्षेत्र है, इसकी शुरुआत वहाँ से होती है, जहाँ पर नगर का निर्मित क्षेत्र समाप्त होता है। यह छोटे-छोटे बगीचे रखने वाले मकानों से सुसज्जित होता है तथा श्यनागार समुदाय का रूप ग्रहण कर लेता है जहाँ रहने वाली आधी से अधिक क्रियाशील जनसंख्या नगर में काम करती है।'[7] अमरीका की **'ब्यूरो ऑफ सेन्सस'** ने कहा है, 'यह भूमि का वह भाग है जो नगरीय विस्तार व प्रवास जैसे मकानों, उद्योगों तथा अन्य कार्यों के स्थापन के लिए उपलब्ध रहता है। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि इस क्षेत्र से नगर को रोजाना आना-जाना बना रहता है और यह क्षेत्र नगरीय विशेषताएँ रखने वाला होता है।

---

3. 'They consider the urban fringe as the zone between the country and the city'. **—R.R. Mayers & J. A. Beegle**

4. 'On the outer borders of the city, between the areas of rural and urban landuse, there is an intermediate zone which shares the characteristics of each. This fringe is invaded by urban uses....' **—R. E. Dickinson**

5. 'Rural-urban fringe is 'that are adjoining the inner fringe outward from the economic city in which there is an intermingling of characteristically agricultural and urban landuses.' **—R. B. Andrews**

6. 'The urban fringe is defined as the land surrounding the town which is not considered as a part of it but whose use in influenced directly by the town.' **—Lewis Keeble**

7. 'They consider it suburbs which begin where the continuous built-up town ends. First, there is the built-up area of houses with small gardens, forming dormitory, communities from which more than half the active population works in the town.' **—Garnier and Chabot**

Scanned with CamScanner

आर० एल० सिंह ने वेहरवीन के विचारों से प्रोत्साहित होकर उपान्त पर अपने महत्त्वपूर्ण विचार प्रकट किए हैं। उन्होंने उपान्त को ग्रामीण भूमि माना है, जो नगरीय तथ्यों से सुसज्जित होती है।[8] यहाँ ग्रामीण भूमि को अर्द्धविकसित नगरीय उपयोग में लाने के लिए धकेल दिया जाता है। कृषि भूमि उपयोग बनाए रखना कहीं-कहीं सम्भव हो पाता है, तो कहीं-कहीं भूमि कृषि कार्यों में बिल्कुल प्रयुक्त नहीं हो पाती है।[9] एक अन्य स्थान पर उन्होंने कहा है कि 'उपांत वास्तव में नगर का वास्तविक व सम्भाव्य विस्तार है, जहाँ पर भूमि उपयोग अधिकांशतः निरन्तर परिवर्तित रूप में नजर आता है।'

एफ० आरप्के—'नगरीय उपान्त सांस्कृतिक विकास का कटिबन्ध है जिसका विकास केन्द्रीय नगरों की राजनीतिक सीमाओं के बाहरी किनारों पर होता जाता है तथा इसका विस्तार कृषि क्षेत्रों तक हो जाता है।'[10]

आर० एस० गोलेज (R.S. Gollege)—'उपान्त भूमि उपयोग प्रारूप का सतत् बदलता हुआ क्षेत्र है। यहाँ खेतों का छोटा आकार, नगरीय उपयोग में आने वाली फसलों की गहन खेती, गतिशील जनसंख्या, उपयोगी सेवाओं तथा प्रोवीजन सेवाओं का कम विस्तार, भूमि का मनमाने ढंग से रिहाइशी प्लाटों में विभाजन आदि विशेषताएँ देखने को मिलती हैं। यह पेटी बराबर गतिशील या परिवर्तित दशा में रहती है।'

कोन्जिन और व्हाइटहैण्ड ने उपान्त को नगरीय बस्तियों के गठन या स्वरूप का प्रमुख निर्धारक माना है।[11]

पास्टलन (Pastalan)—यह मध्यवर्ती क्षेत्र है, जहाँ ग्रामीण भूमि उपयोग नगरीय भूमि उपयोग को मार्ग प्रदान करता है।

हीरालाल—वह भू-भाग, जो अपनी बढ़वार बिखराव की प्रक्रिया के कारण करता है, ग्रामीण-नगरीय उपान्त की विचारधारा को जन्म देता है। अभिकेन्द्रमुखी शक्तियाँ नगर के केन्द्र से बाहर उसके सीमावर्ती भू-भाग पर अनेक कार्यों को स्थापित करके इस पेटी को विकसित करती है।[12]

---

8. 'Rural-urban fringe is the rural land with urban phenomenon. The rural land is forced into urban uses prematurely and is a almost 'frozen' rarely being restored to agricultural uses'. —**R. L. Singh**

9. 'Rural-urban fringe is really an extension of the city itself, actual and potential, and since it is an area where most of the landuses are in flux'. —**R. L. Singh**

10. 'Urban Fringe may be defined as a zone of cultural development that has taken place outside the political boundaries of central cities and extends to the areas of agricultural activity'. —**F. Arpke**

11. They have recognised this fringe belt as significant determinant of the morphology of urban settlements. —**Conzin & Whitehand**

12. The space into which the town extends as the process of dispersion creates the concepts of rural-urban fringe. The centrifugal forces impel functions to migrate from the central zone of a city towards its periphery. —**Hira Lal**

Scanned with CamScanner

विशेषताएँ एवं समस्याएँ (Characteristics and Problems)

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि नगर की बाहरी सीमा पर नगरीय व ग्रामीण क्षेत्र के बीच में एक मध्यवर्ती क्षेत्र पाया जाता है जो नगरीय व ग्रामीण दोनों ही क्षेत्रों की विशेषताएँ रखता है। नगर का सीमावर्ती क्षेत्र नगरीय प्रसार के प्रकोप से पीड़ित रहता है। यहाँ पर मकानों का विस्तार, मुख्य सड़क मार्गों के किनारे मकानों का स्थापन, नये-नये कारखानों की स्थापना तथा और भी अनेक नगरीय कार्य व विशेषतायें विकसित होती जाती हैं। यहाँ तक श्मशान भूमि, कूड़ा-करकट का ढेर, पार्क, बाग, वाटर वर्क्स, गॉल्फ कोर्स आदि भी यहाँ पर किसी न किसी कारण नगरीय क्षेत्र से बाहर विकसित हो जाते हैं। यहाँ इन सब कार्यों को करने वाली इमारतों के बीच में भूमि के खाली बड़े-बड़े प्लाट भी मिलते हैं, जिनमें खेती होती हुई देखी जा सकती है।

आर० ई० डिकिन्सन[13] ने अमरीकी नगरों के अध्ययन से निष्कर्ष निकाला है कि रेल-मार्गों की अपेक्षा मोटर-मार्गों ने इस सीमावर्ती भाग का विकास करने में विशेष मदद की है। धीरे-धीरे फार्मों का अतिक्रमण करके लोग बस्तियों, कारखानों का निर्माण कर रहे हैं। यहाँ के भूमि उपयोग में तेजी से परिवर्तन हो रहे हैं। ये सब परिवर्तन, अर्द्धविकसित नगरीय विकास (Premature urban development) के द्योतक हैं। उपान्त में रहने वाले निवासियों को पीने का पानी, सीवर व्यवस्था, विद्युत, गैस आदि के लिए स्वयं प्रबन्ध करना पड़ता है, क्योंकि नगर का प्रशासन इस क्षेत्र के प्रति अपनी कोई जिम्मेदारी नहीं समझता है। यह पेटी उसके प्रशासित क्षेत्र से बाहर होती है। यहाँ पर भूमि का वितरण बड़ा ही असमान हो जाता है। मकान व कारखाने बिना किसी प्लान के विकसित हो जाते हैं। भूमि के अनेक प्लाट मकान आदि के निर्माण कार्य के लिए छोड़ दिये जाते हैं। इस पेटी में सरकारी दफ्तर भी स्थापित हो जाते हैं तथा यहाँ पर कुछ दुकानें भी बन जाती हैं, जो विशेष रूप से ग्रामीण जनता की आवश्यकता पूरी करती हैं, अनेक वर्कशॉप भी स्थापित हो जाते हैं। यहाँ की भूमि, पार्क, खेल के मैदान आदि कार्यों में भी प्रयुक्त होने लगती है। यहाँ पर कसाई खाना, तेल संग्रह डिपो, हानिकारक व दुर्गन्ध फैलाने वाले उद्योग-धन्धे, कूड़ा-करकट का ढेर, श्मशान भूमि, सीवेज, प्लांट, हवाई अड्डा आदि भी स्थापित हो जाते हैं। अतः स्पष्ट है कि यहाँ पर नगर के लिए बड़े-बड़े महत्त्वपूर्ण कार्य देखने को मिलते हैं। **जी० एस० वेहरवीन** ने कहा भी है कि 'नगर उपान्त वास्तव में नगर का विस्तार है। यह विस्तार वर्तमान भी है तथा सम्भावित या भावी भी। जिस प्रकार नगर या किसी महानगरीय प्रदेश के नगर और समीपवर्ती क्षेत्र तथा उपनगर

---

13. 'The fringe is characterised by the extension of housing estates, of buildings along the main arterial road, and by the location of new factories, golf courses, water-works, cemeteries.... and the like.' —**R. E. Dickinson**

Scanned with CamScanner

आपस में आर्थिक व सामाजिक दृष्टि से एक ही माने जाते हैं उसी प्रकार नगर व उसकी समीपवर्ती पेटी को एक इकाई मानकर नियोजन सम्बन्धी कार्य किये जाने चाहिएँ।[14]

वाल्टर फिरे (Walter Firey) नामक समाजशास्त्री ने मिशीगन राज्य के फ्लिन्ट (Flint) नगर की ग्रामीण-नगरीय उपान्त की समस्याओं तथा विशेषताओं का अध्ययन किया है तथा निम्न महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष निकाले हैं—

(1) इसके द्वारा उत्पादक भूमि का हनन होता है।

(2) भूमि का प्लाटों में वितरण बड़ा ही असमान हो जाता है तथा कारखाने व निवास-स्थान यत्र-तत्र फैल जाते हैं।

(3) इस पेटी में बसी सघन बस्तियों के वास्ते सुविधाएँ जुटाने के लिए भारी टैक्सों की आवश्यकता पड़ती है, लेकिन यहाँ के किसानों और कल-कारखानों व दुकानों में काम करने वालों में इन टैक्सों को चुकाने की क्षमता नहीं होती।

(4) यहाँ पर मकान बन जाने से भूमि की कीमतें ऊँची हो जाती हैं जिससे कृषि को प्रोत्साहन मिलना बन्द हो जाता है।

(5) यहाँ पर जनसंख्या सम्बन्धी परिवर्तन काफी देखने को मिलते हैं। मकान मालिक ही यहाँ पर विशेष रूप से रहते हैं। जनसंख्या में युवाजनों तथा बच्चों की संख्या अधिक होती है। नगर पर निर्भरता बहुत अधिक होती है। ये लोग अपने जीवनयापन के लिए नगर पर ही निर्भर करते हैं। सामाजिक सुविधाओं का अभाव होता है। यहाँ के लोग अपने खाली समय का उपयोग बागबानी या खेती के काम में करते हैं।

1960 में **गोलेज** ने अपने एक अध्ययन में सिडनी नगर के उपान्त की सात विशेषताएँ बतायी हैं—

(1) भूमि अधिग्रहण का लगातार बदलता हुआ प्रारूप देखने को मिलता है।

(2) खेतों का आकार छोटा होता है।

(3) गहरी खेती होती है।

(4) जनसंख्या गतिशील होती है तथा घनत्व कम या साधारण होता है।

(5) रिहाइशी इमारतों का प्रसार तेजी से होता है।

(6) सेवाओं व सार्वजनिक उपयोगिताओं का लगभग अभाव होता है।

(7) इमारतों का किराया ऊँचा होता है।

---

14. 'Rural-urban fringe is really an extension of the city itself, present and potential, and since the city or cities of a metropolitan area and the suburban of fringe areas are a unit economically and sociologically, the entire area should be thought of and planned as a unit.' —**G.S. Wehrwein**

Scanned with CamScanner

1965 में **आर० ई० पहल** (R.E. Pahl) ने उपान्त पेटी की विशेषताओं पर प्रकाश डाला है तथा उनको चार शीर्षकों में रखा है—

(1) **अलगाव** (Segregation)—यह पेटी नयी इमारतों के निर्माण के उपयुक्त होती है जो कि अलगाव के प्रारूप में दिखाई देते हैं। **जे० गिब्स** ने 1970 में नाटिंघम पर अपने एक अध्ययन में बताया है कि इस नगर का उत्तरी और पश्चिमी क्षेत्र 19वीं शताब्दी में औद्योगिक दृष्टि से निर्मित हो चुका था। अतः यह पेटी की अपेक्षा उपनगर (suburb) के रूप में है जबकि दक्षिणी और पूर्वी भाग, जो कि अभी अविकसित है, को पेटी का अंग माना जा सकता है। इस दक्षिणी-पूर्वी भाग में स्पष्ट अन्तर देखने को मिलते हैं। उन्होंने पन्द्रह बातों जैसे कि जनसंख्या-वृद्धि, आयु संरचना, मकानों की विशेषताएँ, सामाजिक-आर्थिक स्तर, रोजगार, कार्य करने का स्थान, यात्रा करने के साधन, गतिशीलता और निर्भरता आदि बातों के आधार पर इन क्षेत्रों का अध्ययन किया तथा चार प्रकार की विशेषताएँ बतायीं— (i) नवीन खनिज बस्तियाँ, (ii) वृहत् रिहाइशी उपनगर, (iii) छोटे रिहाइशी उपनगर, तथा (iv) छोटे गाँव। उनका निष्कर्ष है कि इन उपनगरों के रिहाइशी क्षेत्रों को स्पष्टतः अलग किया जा सकता है। यहाँ पर पुराने गाँव, व्यक्तिगत मकान, सार्वजनिक भूमि आदि सब अलग-अलग देखने को मिलती है। वृहत् नियोजित भूमि खण्डों का प्रयोग व्यापारिक, शिक्षा तथा विभिन्न संस्थानों के रूप में होता है। जनसंख्या के वर्गों के अनुसार भी बस्ती को अलग-अलग समूहों में वर्गीकृत किया जा सकता है। इस पेटी के अनेक भाग रिहाइशी सन्दर्भ में इतने विकसित हो जाते हैं कि उनको रहने के योग्य उपयुक्त माना जा सकता है।

(2) **चयनात्मक आप्रवास** (Selective Immigration)—इस पेटी में रहने वाले गतिशील व मध्यम वर्ग के अभिचयनकर्ता होते हैं, जो रहने व काम करने की दृष्टि से अपना अस्तित्व रखते हैं तथा सामाजिक व आर्थिक दृष्टि से स्थायी जनसंख्या से भिन्नता रखते हैं। ये लोग नगरीय समुदाय का ही एक अंग होते हैं तथा नगर पर ही अपने व्यवसाय के लिए निर्भर करते हैं। उनका प्रमुख आकर्षण नगर होता है जहाँ यह काम करने, सामान खरीदने तथा अनेक सामाजिक कार्यों के लिए आते-जाते हैं।

(3) **अभिगमन** (Commuting)—नगर का अभिगमन यातायात की उपलब्धता एवं लागत पर निर्भर करता है। नगर को जाने वाले उन मार्गों पर तेज यातायात साधन कम खर्चे के साथ उपलब्ध होते हैं, अभिगमन बहुत अधिक होता है और यह पेटी नगर से काफी दूरी तक फैल जाती है।

(4) **नये समुदायों का मिलन**—इस पेटी में रहने वाली जनसंख्या नगर पर निर्भर करती है। यह जनसंख्या इस क्षेत्र में रहने वाली ग्रामीण जनसंख्या पर भारी प्रभाव डालती है। यह उनको एक नये समुदाय में परिणित कर देती है।

1968 में **प्रायोर** (Pryor) ने बताया कि नगर के निकट निर्मित क्षेत्र सामाजिक व आर्थिक इकाई के रूप में होता है। यह उपान्त ग्रामीण शासन को कर (tax) देता है और विद्युत, गैस, पानी व यातायात जैसी नगरीय सुविधाएँ प्राप्त करता है। भूमि उपयोग व जनांकिकी दृष्टि से

Scanned with CamScanner

नगरीय व ग्रामीण दोनों क्षेत्रों के बीच की विशेषताएँ रखता है। यहाँ की अन्य विशेषताओं को इस तरह रखा जा सकता है—

1. नगरीय उपयोगी सेवाओं का अधूरा, अपूर्ण एवं अपर्याप्त होना,
2. असमन्वित कटिबन्धीय व्यवस्था,
3. नगर का प्रशासकीय सीमा के बाहर क्षेत्रीय विस्तार रखना,
4. जनसंख्या घनत्व के वास्तविक व सम्भावित विस्तार का क्षेत्र।

उनका कहना है कि ग्रामीण-नगरीय उपान्त उपयोगी सेवाओं, सार्वजनिक यातायात की अपर्याप्तता, कार-मालिकों की अधिक संख्या से युक्त होता है। इस पेटी के कार्यकर्ता काम करने तथा फुटकर में सामान खरीदने के लिए अपने नगर पर पूरी तरह निर्भर करते हैं।

1975 में **एच० कार्टर** ने अपनी पुस्तक नगरीय भूगोल में बताया है कि वह भू-भाग, जहाँ पर नगर अपना विस्तार करता जाता है, ने एक ग्रामीण-नगरीय उपान्त की अवधारणा को जन्म दिया है। यह वह क्षेत्र है जो विविधताओं से भरा है तथा ग्रामीण व नगरीय दोनों की विशेषताओं से युक्त होता है। एक तो यह अलग धरातलीय खण्ड है अथवा नगर का प्रदेश है जो प्रमुखतया भूमि उपयोग सम्बन्धी विशेषताओं से युक्त होता है। दूसरे, यह वह भूखण्ड है जहाँ पर नगरीकरण ग्रामीणता का अतिक्रमण करता है। उपान्त विभिन्न प्रकृति के समुदायों का प्रदेश होता है। यह समुदाय नगर से बाहर की ओर गमन करने वाले लोगों का समूह है, जो प्रमुखतया मध्यम श्रेणी के परिवार के होते हैं, नगर को आना जारी रखते हैं। यह लोग नगरीय जीवन के तरीकों से प्रभावित होते हैं।[15] यह एक भौगोलिक क्षेत्र है, जिसमें ग्रामीण-नगरीय सात्यतता का प्रभावशाली ढंग से अध्ययन किया जाना चाहिए।

सुदेश नांगिया ने 1976 में दिल्ली महानगर की उपान्त पेटी का अध्ययन करते हुए उसकी निम्न समस्याओं व विशेषताओं पर प्रकाश डाला है—

(1) यह पेटी झौपड़ियों, गन्दी बस्तियों तथा अनधिकृत बस्तियों की विशेषता रखने वाली है। यहाँ पर मकान बिना किसी योजना के बने मिलते हैं।

(2) भूमि उपयोग का मिश्रित रूप पाया जाता है।

(3) कृषि भूमि उपयोग को बनाये रखना मुश्किल हो जाता है।

(4) नगरीय सुविधाओं का अभाव होता है।

(5) इस पेटी में स्थित बिखरी बस्तियों को सुविधाएँ प्रदान करना अति कठिन कार्य होता है तथा इसके लिए अधिक धन की आवश्यकता पड़ती है।

(6) इस पेटी में ग्रामीण व नगरीय दोनों प्रकार के जीवन की झलक मिलती है।

---

15. 'The rural-urban fringe is a region of communities of distinctive nature resulting from the migration of mobile, middle class families oriented to the city and dominated by urban life-styles'. —H. Carter

Scanned with CamScanner

1980 में **एम० एम० पी० सिन्हा** ने पटना महानगर की ग्रामीण-नगरीय उपान्त का विशद् वर्णन किया है, और बताया है कि यह उपान्त सही अर्थों में विभिन्न चौड़ाई वाला संकरा क्षेत्र है, जो नगर की राजनीतिक सीमा के बाहर फैला होता है। यह न तो नगरीय विशेषता रखता है, और न ग्रामीण। ग्रामीण-नगरीय उपान्त एक पुल की भाँति है, जो दोनों (नगरीय व ग्रामीण क्षेत्र) को जोड़ता है। ग्रामीण क्षेत्र की ओर जाने पर नगरीय विशेषताओं के घटाव की प्रवृत्ति सतत् रूप से बढ़ती जाती है अथवा नगर की ओर बढ़ने पर ग्रामीण भूमि में कमी आती जाती है। इसका विस्तार नगर से बाहर की ओर जाने वाले यातायात मार्गों के सहारे-सहारे उन्नतोदर होता है, जबकि ग्रामीण क्षेत्र से नगर की ओर जाने पर यह नतोदर होता जाता है।

विकास के कारण एवं आकृति (Causes of Development and Form)

ऐतिहासिक दृष्टि से ग्रामीण-नगरीय उपान्त के विकास की प्रवृत्ति अनेक सहायक कारकों या आवेगों के कारण होती है। प्रमुख कारक या आवेग नगर के हृदय (core) का तेजी से विकसित होना है। संयुक्त राज्य अमरीका में मोटर यातायात ने उपान्त क्षेत्र के विकास पर सबसे अधिक प्रभाव डाला है। निजी मोटर-वाहनों और नगर की स्थान के लिए बढ़ती हुई भूख ने उपान्त क्षेत्र में सड़कों के सहारे-सहारे रिहाइशी क्षेत्र के विकास में भारी मदद की है। भूमि की विशेषता यानि उसका सस्ता होना, भूमि-उपयोग पर नियंत्रण न होना आदि बातें नगर-निर्भर उद्योगों को उपान्त क्षेत्र में बसने को बाध्य करती हैं। इसके विपरीत वैधानिक व संस्थागत कारक भी उपान्त क्षेत्र के विकास में मदद देते हैं। इनके कारण कसाईखाना, तेल संग्रह डिपो, दुर्गन्ध व शोर मचाने वाले उद्योग उपान्त क्षेत्र में स्थापित हो जाते हैं। नगर की मनोरंजन आवश्यकताओं को भी यह क्षेत्र पूरा करता है। पार्क व खेल का मैदान का निर्माण यहाँ ही किया जाता है। नगरीय उपयोगिताएँ जैसे वाटर वर्क्स, सीवेज प्लाण्ट, हवाई अड्डे व श्मशान भूमि भी उपान्त क्षेत्र के विकास में मदद देती है। वर्तमान युग में नगरीकरण में तेज वृद्धि व परिवहन सुविधाओं के विस्तार ने उपान्त पेटी के विकास में भारी मदद की है।

के० एन० गोपी ने 1978 में प्रकाशित 'Process of Urban Fringe Development : A Model' नामक पुस्तक में हैदराबाद महानगर की उपान्त पेटी का अध्ययन करते हुए बताया है कि जो शक्तियाँ व कारक पश्चिमी देशों के नगरों में उपान्त क्षेत्र के विकास पर प्रभाव डालती हैं, यह कहा जा सकता है कि चाहे वह हमारे देश के महानगरों के उपान्तों के विकास में उतनी प्रभावी नहीं दिखाई देती हों, लेकिन कोई भी व्यक्ति उपान्त के विकास की प्रक्रिया के उपरोक्त तर्कों को कम करके नहीं आँक सकता। भारतीय व पश्चिमी देशों के महानगरों के उपान्तों के विकास की प्रवृत्ति एवं प्रारूप में विस्तृत समानताएँ मिलती हैं। हमारे देश में भी अनेक ऐसे कारकों का उपान्तों के विकास पर प्रभाव दिखाई देता है, जो पश्चिमी देशों में अपना प्रभाव रखते हैं। हैदराबाद महानगर के उपान्त क्षेत्र में उद्योगों की स्थापना, सीवरेज प्लाण्ट, घुड़-दौड़ मैदान (race course) आदि का मिलना इस बात को बताता है कि जो बात **डिकिन्सन** ने पश्चिमी देशों के नगरों के उपान्त के बारे में कही हैं, वही

Scanned with CamScanner

बातें भारत के नगरों पर लागू होती हैं। भारतीय नगरों का उपान्त क्षेत्र उच्च श्रेणी का रिहाइशी क्षेत्र तथा शापिंग कॉम्पलेक्स रखता है। यह विशेषता पश्चिमी नगरों में नहीं पायी जाती। ऐसा भारतीय व पश्चिमी देशों के आर्थिक विकास के स्तर में भिन्नता के कारण भी हो सकता है।

पश्चिमी देशों में ग्रामीण-नगरीय उपान्त पेटी का विकास कई दशाब्दियों पहले ही शुरू हो गया था। लेकिन हमारे देश में यह विकास अभी हाल में ही विशेष रूप से स्वतन्त्रता के बाद शुरू हुआ है और ये विकास भी महानगरों या बड़े नगरों में देखने को मिल रहा है। पश्चिमी देशों में, अमरीका में ब्रिटेन की अपेक्षा इस पेटी का अधिक विकास हुआ है। यहाँ पर इसके विकास की गति भी तेज है। अमरीकी नगरों की उपान्त पेटी में जनसंख्या वृद्धि की दर नगर के भीतर होने वाली जनसंख्या वृद्धि की दर से अधिक है। उदाहरण के लिए, बफैलो तथा न्यूयार्क नगरों की जनसंख्या 1940-50 के दशक में 1 प्रतिशत की दर से बढ़ी जबकि उपनगरों में वृद्धि 33 प्रतिशत थी। यहाँ तक कि किन्हीं-किन्हीं नगरों की जनसंख्या में कमी भी देखने को मिलती है, जबकि उपनगरों में वृद्धि 40 से 90 प्रतिशत तक देखने को मिलती है। उपान्त पेटी में जनसंख्या की इस अतिशय वृद्धि का कारण नगर के भीतर भीड़-भाड़ बढ़ जाने के कारण सुविधाओं में कमी का हो जाना है। मोटर यातायात एवं सड़क मार्गों, विद्युत एवं पीने के पानी की सुविधाओं में वृद्धि ने पिछली कुछ दशाब्दियों में इस उपान्त पेटी के विकास में भारी मदद की है, तथा इसके महत्त्व को बढ़ा दिया है और नगरवासी उपान्त क्षेत्र में बसने लगे हैं। लेकिन फिर भी ग्रामीण-नगरीय उपान्त के लोगों का नगर के बिना कोई अस्तित्व नहीं है, क्योंकि यहाँ पर रहने वाले लोगों को जीविकोपार्जन एवं अन्य सुविधाओं के लिए नगर पर निर्भर रहना पड़ता है।

वर्तमान समय में नगर नियोजक नगर-निर्माण योजनाएँ बनाते समय इस समीपवर्ती पेटी का भी अध्ययन करते हैं और उसी के अनुसार अपनी योजनाएँ बनाते हैं। यहाँ पर औद्योगिक इकाइयों व रिहाइशी इमारतों का तेजी से बसाव होने से अनेक समस्याएँ पैदा हो रही हैं। जिनको हल करने के लिए नगर नियोजक नगर व उसकी सीमावर्ती पेटी को एक इकाई मानते हैं, जैसा कि **वाल्टर फिरे, जी० एस० वेहरवीन, के० एन० गोपी, एम० एम० पी० सिन्हा** आदि ने भी बताया है।

प्रकार एवं सीमांकन (Types and Delimitation)

यह पेटी निश्चित नहीं है। इसकी सीमाएँ समय के साथ-साथ बदलती रहती हैं। जैसे-जैसे नगरीय सुविधाओं का विस्तार होता जाता है, वैसे-वैसे इसकी सीमा नगर से बाहर की ओर सरकती जाती है। उपान्त पेटी अमलैण्ड की भाँति अनेक क्षेत्रों का समूह है, न कि एक भौगोलिक प्रदेश। इसके दो भाग किये जा सकते हैं—

(i) **प्रमुख नगरीय उपान्त** (Primary urban fringe)—यह वह भाग है जहाँ पर नगरीय सुविधाओं व कार्य-कलापों का विस्तार बड़ी तेजी से हुआ है तथा यह नगर की सीमा से लगा होता है। सबसे पहले इसी भाग का विकास होता है।

Scanned with CamScanner

इस पेटी को विद्वानों ने अन्य कई नामों से पुकारा है। **एण्ड्रयूज** ने नगरीय उपान्त (Urban fringe), **रीनमन** (Reinemann) ने बाह्य समीपवर्ती भूभाग (Outlying adjacent zone), **मायर्स व बीगले** ने वास्तविक उपान्त (True fringe) **व्हाइटहैण्ड** ने भीतरी उपान्त पेटी (Inner fringe belt), **एम० एम० पी० सिन्हा** ने भीतरी उपान्त या नगरीय-उपनगरीय उपान्त (Inner fringe or Urban sub-urban fringe) का नाम दिया है।

(ii) **गौण नगरीय उपान्त** (Secondary urban fringe)—प्रमुख नगरीय उपान्त के बाहर चारों ओर फैली पेटी गौण नगरीय उपान्त कहलाती है। इसका विकास अपेक्षाकृत मन्द गति से होता है। यह प्रमुख रूप से ग्रामीण विशेषता वाली होती है। नगरीय कार्य यहाँ कम संख्या में पाये जाते हैं। इस पेटी को भी विद्वानों ने अनेक नामों से पुकारा है। **एन्ड्रयूज** ने ग्रामीण उपान्त (Rural fringe), **रीनमन** ने उपनगरीय क्षेत्र (Suburban zone), **मायर्स व बीगले** ने आंशिक उपान्त (Partial fringe), **व्हाइटहैण्ड** ने ग्रागर उपान्त (Rurban fringe) तथा **एम० एम० पी० सिन्हा** ने बाह्य या ग्रामीण-उपनगरीय उपान्त (Outer fringe or Rural suburban fringe) का नाम दिया है। कुछ लोगों ने इस पेटी को ही ग्रामीण-नगरीय उपान्त का नाम दिया है।

इस पेटी का सीमांकन सबसे बड़ी समस्या है। इसके सीमांकन के विषय में अनेक विद्वानों ने अपने विचार प्रकट किए हैं। 1953 में **क्वीन व कारपेण्टर**, 1956 में **डंकन** व **रीस**, 1956 में **निम्मर व हाउले**, 1957 में **मार्टिने**, 1957 में **रोहटेट व हिटजेल**, 1960 में **गोलवेसज**, 1960 में **रीनमन**, 1963 में **एण्ड्रयूज** और **एहलमन**, 1965 में **पहल**, 1966 में **गोल्डस्मिथ** और **ली**, 1966 में **जॉनसन** ने उपान्त पेटी की सीमाएँ जनगणना अथवा प्रशासकीय क्षेत्रीय इकाईयों के आधार पर निर्धारित की हैं। इनमें से अनेक विद्वानों के विचारों को विस्तृत रूप से समझना आवश्यक है—

स्मिथ का मत—1937 में इन्होंने बताया कि लगातार फैले निर्मित क्षेत्र को आधार मानकर उपान्त का सीमांकन सही तरह से नहीं किया जा सकता।

वेहरवीन का मत—1942 में इण्डियानोपोलिस के नगर के चारों ओर 150 व्यक्ति प्रति वर्ग मील घनत्व के आधार पर उपान्त का सीमा निर्धारण किया है।

आर० एन्ड्रयूज (Richard Andrews) **का मत**—1942 में इस भूमि-अर्थशास्त्री ने इस दिशा में अपने विचार प्रकट करते हुए दो प्रकार की उपान्त बतायी : (i) नगरीय उपान्त (Urban fringe)–यह पेटी सक्रिय नगर विस्तार का सघन क्षेत्र है जिसका प्रयोग नगरीय रिहाइशी व अरिहाइशी कार्यों में होता हुआ दिखाई देता है। (ii) ग्रामीण-नगरीय उपान्त (Rural urban fringe)–यह पेटी नगरीय उपान्त पेटी से लगे बाहरी किनारे पर फैली होती है। यह पेटी परस्पर मिश्रित क्षेत्र है जो कृषि भूमि उपयोग के साथ-साथ नगरीय भूमि उपयोग की विशेषताएँ रखता है।

Scanned with CamScanner

एम० डब्ल्यू० रोडहेवर (M. W. Rodehaver) **का मत**—1946 में विस्कोंसिन विश्वविद्यालय में 'The Rural-Urban Fringe : An Interstitial Area' पर अपना शोध प्रस्तुत किया। उन्होंने उपान्त निर्धारण के लिए अग्र बातों को आधार माना है : (क) कुल परिवारों में अकृषित परिवारों की संख्या, (ख) अकृषित परिवारों का घनत्व, (ग) इमारतों और भूमि का प्रति एकड़ आंकलन मूल्य। इन तीन बातों के आधार पर उन्होंने विस्कोंसिन के मेडीसन (Medison) नगर की ग्रामीण-नगरीय उपान्त पेटी का सीमांकन किया है।

इनका मत विवेकाधीन है तथा इसका प्रयोग अन्य नगरों के उपान्त का सीमांकन करने में नहीं किया जा सकता। यह विधि नगर के चारों ओर से घिरे हुए क्षेत्र को स्पष्ट करने के स्थान पर अति सघन कटिबन्धों को निर्धारित करने में कारगर सिद्ध हुई है।

मायर्स और बीगले (Myres and Beegle) **का मत**—इन्होंने 1948 में अपनी विधि का प्रयोग डेट्रायट नगर के उपान्त का सीमांकन करने में किया है। महानगरीय प्रदेश में कुल जनसंख्या में NV-RNF (Non-Village-Rural Non-farm) जनसंख्या के प्रतिशत के आधार पर किया है। इसके अनुसार 50 प्रतिशत या इससे अधिक NV-RNF जनसंख्या वाले क्षेत्र को उन्होंने वास्तविक उपान्त पेटी (True fringe) का नाम दिया तथा 25-50 प्रतिशत NV-RNF जनसंख्या रखने वाले क्षेत्र को आंशिक उपान्त पेटी (Partial fringe) का नाम दिया है।

मार्टिन (W. T. Martin) **का मत**—इन्होंने 1953 में ओरिगन विश्वविद्यालय प्रेस में प्रकाशित एक लेख में यूगेनी (Eugne) नगर की सीमावर्ती उपान्त पेटी का सीमांकन एक परिवार वाले मकानों के आधार पर किया है तथा बताया है कि इस पेटी का विस्तार उस सीमा तक है जहाँ पर इस पेटी के भूमि उपयोग का रूप खुले क्षेत्रों के बिखरे रूप में बदल जाता है।

डंकन और रीस (Duncan and Reiss)—इन्होंने 1956 में शिकागो की उपान्त पेटी में नगरीय उपान्त, ग्रामीण नान-फार्म और ग्रामीण फार्म के बीच अन्तर स्थापित किया है।

ब्लिजार्ड और एडरसन (S. W. Blizzard and W. F. Aderson) **का मत**—इन्होंने 1962 में पेन्सिलवानिया के विलियमस्पोर्ट नगर की उपान्त पेटी का सीमांकन मोटर परिवहन के सर्वेक्षण के आधार पर किया है। इन्होंने इस पेटी की भीतरी सीमा का निर्धारण उन क्षेत्रों को मिलाकर किया है जहाँ पर नगरीय सेवाओं का विस्तार पूर्ण रूप से विकसित मिलता है तथा बाहरी सीमा का निर्धारण उन क्षेत्रों को मिलाकर किया है जहाँ खेतों के बीच नान-फार्म प्रकार के मकान बिखरे रूप में मिलते हैं। इस पेटी की समस्याओं पर प्रकाश डालने के साथ-साथ उनके निदान व नियोजन पर भी प्रकाश डाला है।

मुखर्जी (D. Mukherjee) **का मत**—इन्होंने 1963 में 'The Concept of Urban Fringe and its Delimitation–The Case of Orland, Florida, U.S.A.' नामक लेख लिखा जो कोलकाता की भूगोल पत्रिका में प्रकाशित हुआ है। उन्होंने बताया कि उपान्त पेटी का सीमांकन करने के लिए जितनी भी विधियाँ अब तक काम में लायी गयी हैं, वे सब

Scanned with CamScanner

फ्लोरिडा के इस नगर का उसके अपने विशिष्ट रूप के कारण सही नहीं उतरतीं। उन्होंने नगर की प्रशासकीय सीमा को उपान्त के भीतरी भाग के रूप में माना तथा उपान्त पेटी के भूमि उपयोग के विश्लेषण हेतु एक निर्देशिका तैयार करने के लिए भूमि को उसके उपयोग के अनुसार आठ वर्गों में विभाजित किया। ये वर्ग इस प्रकार हैं : नगरीय भूमि, रसदार उपवन भूमि, कृषि भूमि, चरागाह भूमि, रेंज भूमि, वन भूमि, निष्क्रिय भूमि और दलदली भूमि। उन्होंने उपान्त पेटी में निर्मित क्षेत्र या बँटी हुई भूमि की निर्देशिका का निर्धारण वायु-फोटो मानचित्र तथा क्षेत्रीय सर्वेक्षण के आधार पर किया है। 25 प्रतिशत या उससे अधिक निर्मित भूमि अर्थात् बँटी हुई भूमि का हिस्सा रखने वाले क्षेत्र को नगरीय उपान्त पेटी का अंग माना है। इस प्रकार इस अध्ययन में भूमि उपयोग विशेष रूप से उपान्त पेटी में भूमि का कितना भाग नगरीय कार्यों में प्रयोग किया जाता है, को ध्यान में रखा है।

व्हाइटहैण्ड (Whitehand) **का मत**—1967 में उपान्त पेटी तीन कटिबन्ध बताए—(i) भीतरी उपान्त पेटी केन्द्रीय व्यापार क्षेत्र (CBD) को चारों ओर से घेरे रहते हैं। (ii) मध्यवर्ती उपान्त पेटी–भीतरी उपान्त पेटी के निकट का निर्मित क्षेत्र मध्यवर्ती उपान्त पेटी कहलाती है। (iii) बाह्य उपान्त पेटी-देहाती क्षेत्र में स्थित गाँव, जो कृषि भूमि रखते हैं, बाह्य उपान्त पेटी बनाते हैं।

कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय की अन्तर्राष्ट्रीय नगरीय शोध संस्था ने अमरीका के जनगणना ब्यूरो द्वारा विचारों को समर्थन देते हुए नगरीय उपान्त में उन सभी क्षेत्रों को शामिल किया है जो कृषि के अलावा अन्य सभी आर्थिक कार्यों में 65 प्रतिशत श्रमिक रखते हैं।

उस्थविजेन (Oosthwizen) **का मत**—इन्होंने 1969 में उपान्त क्षेत्र के लिए उपनगरीय क्षेत्र, ग्रामीण उपनगर और अर्ध-नगरीय क्षेत्र या अर्ध ग्रामीण नगरीय क्षेत्र नामों का प्रयोग किया है। उपनगरीय म्युनिसिपल सीमा से सटे हुए उसके बाहरी भाग पर स्थित रिहाइशी क्षेत्र होते हैं। यह कोई स्वरूप नहीं रखते हैं और नगर के प्रशासन नियन्त्रण में नहीं होते हैं, लेकिन प्रयोगात्मक दृष्टि से यह नगर के अंग माने जाते हैं। यह प्रायः अलग ही नगरीय विशेषता से युक्त होते हैं तथा मूल नगर के आर्थिक, सामाजिक, प्रशासकीय एवं अन्य कार्यों के लिए जुड़े होते हैं। यहाँ के लोगों का मूल नगर में रोजाना आना-जाना रहता है। अर्द्ध-नगरीय क्षेत्र (Quasi-urban area) का अर्थ है, वह जनसंख्या पुंज जैसे कि गाँव या बिखराव युक्त आबाद रिहाइशी क्षेत्र, जो नगरीय प्रशासन द्वारा किसी भी रूप में नहीं पहचाने जाते हैं, महानगरीय क्षेत्र से काफी दूर स्थित होते हैं तथा अपने मूल नाम से ही जाने जाते हैं।

आर० जे० प्रायोर (R. J. Pryor) **का मत**—उन्होंने उपान्त को दो कटिबन्धों में बाँटा है—(i) नगरीय उपान्त (Urban fringe)–यह नगर की सीमा से सटा हुआ भूभाग होता है। यहाँ पर रिहाइशी मकानों का घनत्व, ग्रामीण नगरीय उपान्त में पाये जाने वाले औसत घनत्व से अधिक होता है। यहाँ पर रिहाइशी, व्यापारिक, औद्योगिक व खाली भूमि इकाईयों का अधिक विस्तार होता है तथा फार्म भूमि का विस्तार कम होता है। जनसंख्या घनत्व वृद्धि की दर अधिक होती है। भूमि उपयोग व सामुदायिक परिवर्तनों में वृद्धि बड़ी तेजी से होती है।

Scanned with CamScanner

(ii) ग्रामीण उपान्त (Rural fringe)–ग्रामीण उपान्त नगरीय उपान्त से सटा हुआ होता है। यहाँ रिहाइशी मकानों का घनत्व ग्रामीण नगरीय उपान्त के औसत घनत्व से कम होता है। यहाँ पर नान-फार्म की अपेक्षा, फार्म भूमि का प्रतिशत अधिक होता है। जनसंख्या में वृद्धि दर, भूमि उपयोग व सामुदायिक परिवर्तन की दर मंद होती है।

इस प्रकार **प्रायोर** ने भूमि उपयोग की विशेषता, रिहाइशी मकानों के घनत्व तथा जनसंख्या वृद्धि दर द्वारा उपान्त पेटी का सीमांकन किया है।

एम० के० श्रीवास्तव का मत—नगरीय उपान्त की विशेषता और सीमांकन लेख में, जो 'नेशनल ज्योग्राफर' (National Geographer) नामक भूगोल पत्रिका में 1971 में प्रकाशित हुआ, बताया है कि रोडहेवर का मत पश्चिमी देशों के नगरों के उपान्त के सीमांकन के निर्धारण में महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो सकता है। भारतीय नगरों के लिए यह मत उपयुक्त प्रतीत नहीं होता। उनके अनुसार उपान्त की सीमाएँ निर्धारित करने में इन बातों पर ध्यान दिया जा सकता है—(i) भूमि उपयोग प्रारूप, (ii) परिवहन सुविधाएँ, (iii) जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना, (iv) सामाजिक-आर्थिक विकास, और नगरीय सुविधाओं की उपलब्धता। इन्होंने भारतीय नगरों के नगरीय उपान्त पर प्रकाश डाला है।

उजागरसिंह का मत—इन्होंने अपनी विधि का उल्लेख केवाल (KAVAL) नगरों की उपान्त पेटी का सीमांकन करते हुए किया है। उनकी विधि की प्रमुख बातें इस प्रकार हैं—

(क) मकानों के प्रकार तथा निर्मित क्षेत्र में अन्तर—मकानों के प्रकार तथा निर्मित क्षेत्र (Built-up area) के आधार पर नगर व ग्राम के बीच सीमांकन किया जा सकता है। दीर्घमापक पर बना मानचित्र इस उद्देश्य के लिए उपयुक्त रहता है क्योंकि इसमें सघन बसे क्षेत्र तथा बिखरे हुए कृषि क्षेत्र के बीच में बसे संगठित गाँवों को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। जनसंख्या वितरण का मानचित्र भी नगर व ग्राम के बीच के क्षेत्र की विशेषताओं को स्पष्ट करने में सहायक हो सकता है। मकानों के प्रकार का जहाँ तक प्रश्न है नगर की सीमा तक पक्के मकानों का प्रतिशत अधिक होगा और दूर जाने पर कम। उपान्त क्षेत्र में आमतौर पर चौड़ी तथा सीधी सड़कें मिलती हैं तथा उनमें से कुछ सड़कें नयी तथा कुछ निर्माणाधीन होती हैं जबकि नगर के भीतर ऐसा नहीं होता।

(ख) निवासियों की व्यावसायिक संरचना—नगरों में कृषि व्यवसाय का महत्त्व बिल्कुल भी नहीं होता है। जबकि उपान्त पेटी, विशेष रूप से वास्तविक उपान्त पेटी, में कृषि व्यवसाय में लगे लोगों का प्रतिशत 20 से 50 के बीच होता है। यहाँ पर आकर्षित व्यवसायों का महत्त्व धीरे-धीरे बढ़ता जाता है तथा औद्योगिक व अन्य सेवा कार्य में लगे लोगों का प्रतिशत बढ़ता है। यहाँ पर कुछ लोग साग-सब्जी, फल, दूध आदि के कार्य में लगे रहते हैं। वास्तविक उपान्त पेटी के बाहर 60 प्रतिशत से अधिक व्यक्ति कृषि कार्य में लगे मिलते हैं। यहाँ पर कृषि प्रमुख व्यवसाय होता है तथा लोग खाद्यान्नों के उत्पादन में लगे रहते हैं।

Scanned with CamScanner

(ग) औद्योगिक प्रतिष्ठान और बड़े संस्थानों के बसाव-स्थान—नगर से बाहर की ओर बड़े-बड़े शिक्षा संस्थानों, प्रशासकीय दफ्तर, मनोरंजन केन्द्र, औद्योगिक इकाइयाँ तथा अन्य इसी प्रकार के अनेक बड़े-बड़े संस्थान मिलते हैं।

आंशिक उपान्त में पेटी में चूने व ईंटों के भट्टों की उपस्थिति देखने को मिलती है। इन भट्टों से रोजाना ट्रक व बैलगाड़ी के द्वारा ईंट व चूना शहर को लाया जाता है। ये नगर से पन्द्रह किलोमीटर दूरी के अन्दर स्थित होते हैं। चूँकि भट्टों को अधिक भूमि की आवश्यकता पड़ती है, अतएव ये नगर की म्युनिसिपल सीमा के बाहर स्थापित हो जाते हैं।

नगर की सेवाओं जैसे कि जल की सप्लाई तथा सीवर लाइन का विस्तार नगर की सीमा तक ही होता है। इस सीमा से बाहर बने मकानों में अर्थात् वास्तविक उपान्त पेटी में लोग हैण्ड पम्प तथा सीवरेज पिट्स का प्रयोग करते हैं जबकि आंशिक उपान्त पेटी में पानी कुँओं द्वारा प्राप्त किया जाता है। अतः स्पष्ट है कि कुँओं व हैण्ड पम्प के वितरण का मानचित्र न केवल वास्तविक व आंशिक उपान्त पेटी के बीच की सीमा को निर्धारित करने में मदद देगा बल्कि साथ-साथ नगर की सीमा तथा वास्तविक उपान्त पेटी के बीच की सीमा को भी निर्धारित करेगा।

उपान्त पेटी में स्कूलों का भी अभाव होता है। अतः स्कूलों का मानचित्र नगर व ग्राम वास्तविक उपान्त पेटी के बीच की सीमा के अंकन में सहायक सिद्ध होगा।

डॉ० सिंह ने उपर्युक्त बातों के आधार पर ही केवाल नगरों की उपान्त पेटी का सीमांकन किया है। इन्हीं निर्देशिकाओं को अन्य नगरों के उपान्त के सीमाकंन के काम में लाया जा सकता है। ग्रामीण-नगरीय उपान्त पेटी के सीमांकन के लिए मुख्य रूप से निम्न बातों को आधार माना जा सकता है—

(1) भूमि उपयोग परिवर्तन (Changes in Landuse),

(2) निर्मित क्षेत्र में परिवर्तन (Changes in the Built-up area),

(3) व्यावसायिक संरचना (Occupational Structure),

(4) गृह प्रकार (House Types),

(5) औद्योगिक इकाईयों का वितरण और अकृषित क्रिया-कलाप (Distribution of Industrial and Non-agricultural activities),

(6) आवश्यक सेवाओं का विस्तार (Limit of Essential Services), तथा

(7) शिक्षा संस्थानों का वितरण (Distribution of Educational Institutions)।

एम० एम० पी० सिन्हा का मत—इन्होंने पटना महानगर के उपान्त पर अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ 1980 में प्रस्तुत करते हुए उपान्त पेटी को दो भागों में बाँटा है—(i) भीतरी उपान्त या नगरीय उपनगरीय उपान्त (USF)—यह वह क्षेत्र है, जो म्युनिसिपल सीमा या नगर की राजनीतिक सीमा के बाहर फैला होता है। नगरीयता का मान ऊँचा होता है। यह लगातार

Scanned with CamScanner

फैला निर्मित क्षेत्र है, जो चौड़ाई में भिन्नता रखता है तथा प्रमुख रूप से सड़क मार्गों के सहारे-सहारे फैला होता है। यह पेटी वह सभी सुविधाएँ (जैसे कि विद्युत, दूरभाष, पानी की सप्लाई पाइप लाइन द्वारा आदि) पाती है, जो कि एक नगरीय बस्ती प्राप्त करती है। (ii) बाह्य उपान्त या उपनगरीय ग्रामीण उपान्त (RSF)–यह पेटी भीतरी उपान्त की बाहरी सीमा पर फैली होती है। यहाँ निर्मित क्षेत्र बिखरा होता है। बाजार सुविधाएँ आंशिक रूप से मिलती है। कृषित भूमि का प्रतिशत अधिक होता है। कृषि भूमि पर उन्हीं वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है, जिनकी नगर में माँग होती है। यहाँ पर साग-सब्जी, फल, डेरी-उत्पादन व मुर्गी-पालन के कार्य प्रमुख रूप से होते हैं।

इन दोनों पेटियों के बीच की सीमा को आसानी से पहचानना व स्पष्ट करना अति कठिन है, क्योंकि दोनों एक-दूसरे से जुड़ी होती हैं व परस्पर निर्भर होती हैं। जब नगर अपनी सीमाओं का विस्तार करता है, तो नगरीय उपान्त नगर में मिल जाता है तथा धीरे-धीरे ग्रामीण उपान्त को अपने में शामिल करता जाता है और ग्रामीण उपान्त ग्रामीण क्षेत्र का अतिक्रमण करने लगता है। भौतिक व्यावधान की दशा में बाहरी उपान्त आगे की ओर नहीं बढ़ पाता है, लेकिन भीतरी उपान्त नगरीकरण के साथ अपनी वृद्धि को बनाए रखता है।

उनका कहना है कि हमारे देश में कार-मालिकों की संख्या को उपान्त के सीमांकन का आधार नहीं माना जा सकता। ऐसा तब सम्भव हो सकता है, जब उपान्त का विकास नियोजित तरीके से किया जाए। नियोजित उपान्त भविष्य में नगर का अंग बन जाता है। यह लम्बे समय तक उपान्त के रूप में नहीं ठहर पाता। औद्योगिक व खनन नगरों में ऐसा विकास मिलना अधिक सम्भव है, क्योंकि लोग शोर व दुर्गंध से बचने के लिए उपान्त पेटी में मकान बनाकर रहना अधिक पसन्द करते हैं। भारत के नगरों की उपान्त पेटी में परिवहन व उपयोगी सेवाओं का अभाव होता है। यहाँ पर अभिगमनकर्ताओं (commuters) की संख्या सबसे अधिक होती है। उपान्त ग्रामीण व नगरीय क्षेत्र के बीच एक पुल का कार्य करता है। इसलिए यहाँ पर नगरीयता व ग्रामीण जीवन की विशेषताएँ मध्यम-स्तर पर पाई जाती हैं। ये विशेषताएँ इस प्रकार हैं– यात्रा समय, नगरीय आदतें, भूमि की कीमत, सार्वजनिक उपयोगी सेवाएँ, अभिगमन जनसंख्या, अकृषित कार्यकलाप, जनसंख्या घनत्व, प्राथमिक कार्यकलाप, निर्मित क्षेत्र, पुरुष-महिला अनुपात, साक्षरता, कृषि कार्यकलाप आदि। ये विशेषताएँ एक नगर से दूसरे नगर में भिन्नता लिए होती हैं। इन पर नगर की भौतिक व सांस्कृतिक परिस्थितियों का प्रभाव पड़ता है। इन सभी विशेषताओं को उनके सापेक्षिक महत्त्व के अनुसार उपयुक्त मान प्रदान करके उचित निर्देशांक प्राप्त किया जा सकता है, जिनकी सहायता से उपान्त पेटी का सही सीमांकन किया जा सकता है।

इस पेटी की प्रमुख समस्या भूमि उपयोग की है। यह गतिक अवस्था में होता है और ग्रामीण भूमि नगरीय कार्यों में प्रयुक्त होने लगती है। इस पर नगर से दूरी, परिहवन सुविधा स्थिति व समय का प्रभाव पड़ता है। यहाँ पर कृषि के अन्तर्गत उन्हीं फसलों का उत्पादन किया जाता है, जिनसे अधिक आर्थिक लाभ की सम्भावना रहती है। यह बात वान-थ्यूनेन के [illegible] के अनुरूप है।

Scanned with CamScanner

जब कृषक अपनी कृषि भूमि नगरीय कार्यों के विस्तार के लिए बेच देता है, तो वह अपनी जीविका के लिए नगर पर निर्भर करता है। यहाँ पर जनसंख्या का दबाव बढ़ने से आवासीय समस्या उग्र रूप धारण कर लेती है, साथ-साथ शिक्षा, परिवहन, शापिंग की समस्याएँ भी बढ़ती जाती हैं। नगर का प्रशासन इस क्षेत्र के अपने अधिकार क्षेत्र से बाहर होने के कारण इनके विस्तार की ओर ध्यान नहीं देता। यहाँ पर जल प्रदाय व विद्युत जैसी सुविधाओं का भी अभाव होता है। सड़कों व गलियों का सही तरह से निर्माण नहीं हो पाता। यहाँ चिकित्सा सुविधाओं का भी अभाव मिलता है।

भारत में इस दिशा में किये गये प्रयास (Indian Studies)

भारत में इस विषय पर अध्ययनों की शुरुआत यद्यपि 1950–60 के दशक में हो चुकी थी, लेकिन अलग-अलग नगरों को लेकर या किसी एक प्रदेश के नगरों को एक साथ ध्यान में रखकर ग्रामीण-नगरीय उपान्त पेटी का अध्ययन सबसे अधिक 1970 के बाद होता हुआ दिखाई देता है। 1955 में **आर० एल० सिंह** ने बनारस नगर की संक्रमण पेटी का सामान्य पर्यवेक्षण उसके उपनगरीय क्षेत्रों के बारे में बताते हुए प्रस्तुत किया है। यह उपनगरीय क्षेत्र असमान रूप से वितरित पुरवा गाँवों से सुसज्जित है तथा अपने समीपवर्ती नगरीय समुदाय पर पूरी तरह से आश्रित है। यह क्षेत्र नगर को ताजा साग-सब्जी, फल व डेरी उत्पादन प्रदान करता है। उन्होंने इस क्षेत्र में स्थित सुन्दरपुर गाँव को सेम्पिल रूप में चुनकर सर्वेक्षण किया है।

1956 में **हेमलता आचार्य** ने भारत के प्रथम वर्ग के नगर के पड़ोसी क्षेत्र में ग्रामीण जीवन की अर्थव्यवस्था का अध्ययन नगरीय बाजार के प्रभाव के संदर्भ में किया है। इसी वर्ष **पी० एन० प्रभु** ने कोंकन से औद्योगिक श्रम शक्ति के पलायन पर विचार किया है और कोंकन पर पड़ने वाले इस आर्थिक दबाव के कारणों को जानने का प्रयास किया है। 1959 में **के० दाण्डेकर** ने रत्नागिरि गाँव के पुरुषों के पलायन को ध्यान में रखते हुए उस पर जनांकिकी प्रभावों का अध्ययन किया है।

1960 में कैलोफोर्निया के **बरकले** (Berkley) नगर में भारत में नगरीकरण विषय पर आयोजित गोष्ठी में **एलैफसन** ने भारतीय नगरों के उनके पृष्ठ-प्रदेश से सम्बन्धों पर चर्चा की तथा इन नगरों का अपने चारों ओर की भूमि पर विकास व विस्तार से पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण किया। उनका अध्ययन पाँच महानगरों : मुम्बई, दिल्ली, चेन्नई, हैदराबाद और बड़ौदरा पर आधारित है। उन्होंने नगर व उसको चारों ओर से घेरने वाली भूमि को 6 भागों में बाँटा है। इनमें दो तो नगर के प्रमुख भाग को बाँटते हैं तथा शेष चार नगर के चारों ओर से घेरने वाली भूमि को बाँटते हैं। ये क्रमशः इस प्रकार हैं—(i) नगर का भीतरी वार्ड, (ii) उपनगरीय वार्ड, यह दोनों नगरीय भाग को बाँटते हैं, (iii) नगरीय सीमा से 2 मील तक फैली भूमि या पेटी, (iv) प्रमुख यातायात मार्गों के दोनों किमारों पर एक मील की दूरी तक फैली रिबननुमा पेटी, (v) सहायक सड़कें जो चाहे प्रमुख सड़कों की फीडर सड़कों के रूप में हों या फिर नगर

Scanned with CamScanner

अथवा उपर्युक्त पेटी से अपना सीधा सम्बन्ध रखती हों, तथा (vi) अन्तरालीय गाँव (Interstitial villages)।

इन सब बातों के साथ-साथ गमनीयता को विशेष रूप से ध्यान में रखा है। इन्होंने बताया कि नगर के घने बसे निर्मित क्षेत्र और चारों ओर फैले देहात में कृषि क्षेत्र के बीच अन्तर को स्पष्ट रूप से भूमि पर देखा जा सकता है। भारतीय नगरों में यदि एक व्यक्ति नगर के भीतरी भाग से बाहरी भाग की ओर जाये तो अमरीकी नगरों की भाँति मकानों की लम्बी एक रिबननुमा पेटी, शापिंग स्थल (दूकानें) और कल-कारखानों की लम्बी कतारें व उनका घना जमाव देखने को नहीं मिलेगा। नगर जैसे-जैसे अपने आकार का विस्तार करता जाता है वैसे-वैसे वह अपने चारों ओर फैली निकटवर्ती ग्रामीण भूमि का अपहरण करता जाता है। नगरीय सीमा के बाहर फैला यह क्षेत्र अनेक विशेषताओं से युक्त हो जाता है, जैसे पुराने गाँव नगर में पूरी तरह घुल-मिल जाते हैं। इस उपान्त पेटी में सरकारी व व्यक्तिगत मकान, बिखरे हुए रूप में व्यक्तिगत मकान, विस्थापितों तथा अप्रवासियों के लिए कामचलाऊ देहाती प्रकार के मकान, बिखरे हुए औद्योगिक व व्यापारिक संस्थान तथा कृषित भूमि के भूखण्ड, जिनको नगरीय दृष्टि से अविकसित भूमि का नाम दिया जा सकता है, पाये जाते हैं।

कानुपर का उपान्त (Kanpur fringe)—1965 में **हरिहर सिंह** ने कानपुर महानगर के नगरीय भूगोल पर अपना महत्त्वपूर्ण शोध कार्य प्रस्तुत किया जिसमें उन्होंने कानपुर महानगर के द्वारा बीसवीं शताब्दी के दौरान किये गये भारी विस्तार के बारे में बताया है। इनके अनुसार इस महानगर ने अपने चारों ओर फैली भूमि का बहुत अधिक मात्रा में अपहरण किया है। 1900 में इस नगर की म्युनिसपैलिटी का क्षेत्रफल केवल 8 वर्गमील था जो 1950 में बढ़कर 20 वर्गमील तक पहुँच गया। 1959 में यहाँ पर महापालिका की स्थापना की गयी तथा इसके अन्तर्गत 101 वर्गमील का क्षेत्र रखा गया जिसमें 150 से भी अधिक गाँवों को महापालिका सीमा में मिला लिया गया। काफी लम्बे समय तक इस नगर का विस्तार गंगा नदी के दायें किनारे से लेकर ग्रांड ट्रंक रोड के बीच फैले क्षेत्र तक ही सीमित रहा तथा ग्रांड ट्रंक रोड ने इस महानगर की उपान्त पेटी की भीतरी सीमा के रूप में काम किया। आज ग्रांड ट्रंक रोड व महापालिका की वर्तमान सीमा के बीच फैली ग्रामीण-नगर उपान्त पेटी नगरीय संस्थानों व अन्तः क्षेत्र से पूरी तरह प्रभावित मिलती है। यहाँ पर नगरीय कार्यों का विस्तार काफी अधिक हो गया है।

पुणे महानगर (Pune fringe) की उपान्त पेटी के भूमि उपयोग नियोजन पर प्रकाश डालते हुए एक विद्वान ने बताया है कि नगरीय नियेाजन के लिए उस क्षेत्र के भूमि उपयोग के ज्ञान की अति आवश्यकता होती है, जिस क्षेत्र का नियोजन कार्य किया जाना है। यह तीन आधार पर हो सकता है : एक तो वायु फोटो मानचित्र, दूसरा ग्रामीण रिकार्ड तथा तीसरा क्षेत्रीय पर्यवेक्षण। मिट्टी की उपजाऊ शक्ति तथा वर्तमान भूमि उपयोग के आधार पर इस पेटी के नियोजन हेतु एक मानचित्र तैयार किया है।

Scanned with CamScanner

हैदराबाद उपान्त (Hyderabad fringe)—1972 में आलम और खान ने हैदराबाद महानगर और उसके प्रदेश का अध्ययन करते हुए नगरीय प्रभाव की प्रासंगिकता निर्धारित की है। महानगरीय हृदय प्राथमिक कटिबन्ध है तथा सीमावर्ती नगरीय क्षेत्र (Feri-urban zone) गौण उपान्त है।

केवाल उपान्त (Kaval fringe)—**डॉ० उजागर सिंह**[16] ने उत्तर प्रदेश के केवाल (KAVAL)[17] नगरों की उपान्त पेटी का अध्ययन करते हुए बताया है कि इन नगरों में मुख्य सड़क मार्गों के किनारे उँगली की भाँति नगरीय निर्माण-क्षेत्र का विकास हो रहा है। यहाँ पर रिहाइशी मकानों के साथ-साथ औद्योगिक इकाईयाँ स्थापित होती जा रही हैं। ऐसा इन नगरों की महापालिका सीमा के बढ़ने, नगरीय सुविधाओं के विस्तार, मोटरवाहनों का व्यापारिक एवं वाणिज्य कार्यों में विस्तृत प्रयोग, तथा इसी प्रकार के अन्य विकास कार्यों के कारण हो रहा है। केवाल नगरों की उपान्त पेटी से मालूम होता है कि 1959 के बाद से इन नगरों की महापालिका सीमा में कई समीपवर्ती गाँवों को शामिल किया जा चुका है जैसा कि निम्न सारणी से भी स्पष्ट है—

नगर	महापालिका सीमा में लिए गये नये गाँवों की संख्या	शामिल गाँवों का क्षेत्रफल (वर्ग किमी० में)
कानुपर	157	204.80
आगरा	34	23.04
वाराणसी	93	20.48
इलाहाबाद	55	15.36
लखनऊ	47	48.64
योग	386	312.32

Source : R. L. Singh (ed.), *Applied Geography,* NGSI, 1968, Varanasi, 41.

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि केवाल नगरों ने समीपवर्ती कृषि क्षेत्र का हनन किया है। इन नगरों की महापालिका सीमा में विस्तृत कृषि क्षेत्र पाया जाता है। यह कृषि क्षेत्र ग्रामीण बस्ती को चारों ओर से घेरे हुए है तथा नगर के निर्माण क्षेत्र के बाहर फैला हुआ है। औसत रूप में केवाल नगरों की 53.65 प्रतिशत भूमि अनगरीय कार्यों में लगी हुई पायी जाती है। कानपुर नगर में ऐसी भूमि का क्षेत्रफल सबसे अधिक 205 वर्ग किमी० है। अग्रांकित सारणी केवाल नगरों में भूमि के नगरीय तथा अनगरीय कार्यों में प्रयोग के बारे में बताती है—

16. **U. Singh,** 'Urban Fringes of KAVAL Towns : A Study in Their Delimitation and Landuse Changes'. *Applied Geography,* NGSI, Varanasi.

17. KAVAL Towns : Kanpur, Agra, Varanasi, Allahabad and Lucknow.

Scanned with CamScanner

महानगर	कुल क्षेत्रफल (हैक्टर में)	नगरीय कार्यों में लगा क्षेत्र	प्रतिशत	अनगरीय कार्यों में लगा क्षेत्र	प्रतिशत
कानपुर	25856.00	4200.50	71.1	21655.50	28.9
आगरा	5912.30	3262.60	55.4	2649.70	44.6
वाराणसी	7302.24	3694.30	50.3	3607.94	49.7
इलाहाबाद	6195.20	3481.26	68.7	2713.94	31.3
लखनऊ	10240.00	4096.00	40.2	6144.00	59.8

शाहदरा की उपान्त पेटी (Shahdara Fringe)—1972 में **आर० सी० गुप्ता** ने मेरठ विश्वविद्यालय में शाहदरा की ग्रामीण-नगर उपान्त पेटी पर अपना शोध-ग्रन्थ प्रस्तुत किया। इस समस्या को लेकर यह ग्रन्थ हमारे देश में अपने आप में पहला उदाहरण प्रस्तुत करता है। शाहदरा दिल्ली की उपनगरीय बस्ती है। इस नगर के सभी भागों में विकास की दर एक समान नहीं दिखाई देती। नगरीय सुविधाओं का जमाव मध्य भाग में अधिक मिलता है। लेकिन जैसे-जैसे हम नगर से बाहर की ओर जाते हैं वैसे-वैसे इनकी संख्या कम होती जाती है व इनके स्तर में भी परिवर्तन आता जाता है। विशेष तौर पर नगर के बाहरी छोर पर नगरीय-ग्रामीण दोनों प्रकार की दिशाएँ मिश्रित रूप से देखने को मिलती है। इस पेटी को **डा० गुप्ता** ने ग्रागर उपान्त (Rurban fringe) का नाम दिया है। उनका कहना है कि वह पेटी शाहदरा की नगरीय उपान्त (Urban fringe) की बाहरी सीमा पर पाये जाने के साथ-साथ नगर की सीमा के भीतर उन स्थानों पर भी देखने को मिलती है जहाँ पर नगरीय सेवाएँ अपर्याप्त हैं और वहाँ के व्यक्ति न तो पूरी तरह नगरीय जीवन व्यतीत कर रहे हैं और न पूरा ग्रामीण जीवन। शाहदरा के तीव्र आधुनिक विकास के कारण नवीन निर्मित क्षेत्रों में भारी प्रयत्नों के बावजूद नगरीय सुविधाएँ नहीं जुटाई जा सकती हैं। अतः ऐसे क्षेत्रों को ग्रागर उपान्त पेटी में शामिल किया जा सकता है। उन्होंने इस पेटी की बाहरी और भीतरी सीमाओं का निर्धारण अलग-अलग मापदण्डों के आधार पर किया है। भीतरी सीमा का निर्धारण करने में पक्की सड़कें व गलियाँ, विद्युत प्रदाय, जल प्रदाय, सार्वजनिक सीवरेज, भूमि उपयोग एवं खाली भूमि आदि की सहायता ली है। बाहरी सीमा का निर्धारण करने में निम्न बातों की सहायता ली है : एक तो वह क्षेत्र लगातार रूप में फैला हो, यहाँ पर अर्द्ध-नगरीय सुविधाएँ उपलब्ध हों, उस क्षेत्र के बाहर खुली भूमि या कृषि भूमि हो। इसके साथ-साथ यातायात सुविधा व लोगों के व्यवसाय को भी ध्यान में रखा है।

बरेली नगर की उपान्त पेटी (Bareilly fringe)—1972 में **हीरालाल** ने नगरीय प्रभाव की प्रवणता ग्रामीण बस्तियों के संकेन्द्रण के संदर्भ में बरेली नगर की उपान्त पेटी का अध्ययन किया है (चित्र 19.4)। **जी० डी० सिंहल** ने गया नगर के स्थानिक विकास का उपान्त में स्थित ग्रामीण बस्तियों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया है। उन्होंने जनसंख्या घनत्व, मकान घनत्व, निर्मित भूमि क्षेत्र, बस्ती प्रारूप आदि के आधार पर उपान्त प्रदेश के परिवर्तनों एवं विशेषताओं का अध्ययन किया है। उनके अनुसार उपान्त नगर और देहात क्षेत्र के बीच धुँधलका

Scanned with CamScanner

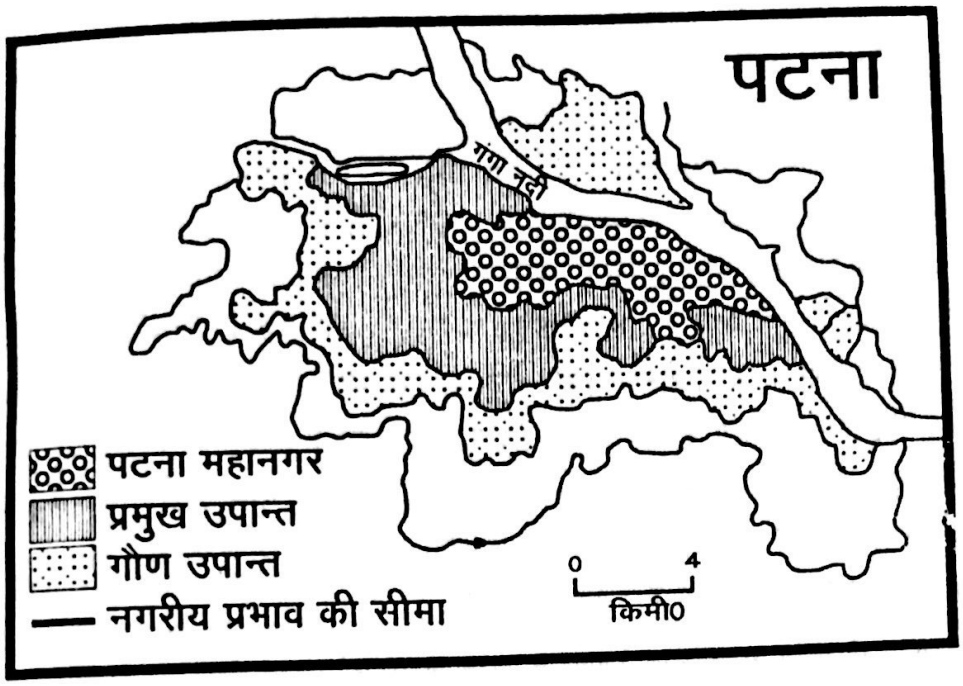

चित्र 19.2 : पटना महानगर का उपान्त (एम० एम० पी० सिन्हा के अनुसार)

कटिबन्ध है।[18] 1973 में **एल० आर० सिंह** व **एम० के० श्रीवास्तव** ने इलाहाबाद के नगरीय उपान्त में भूमि-उपयोग प्रारूप के परिवर्तनों का अध्ययन किया है। 1975 में अरुणाचलम ने महाराष्ट्र में नगरीय प्रभुत्व के विस्तार पर बताते हुए कहा कि भारत के नगर पृष्ठ प्रदेश की दृष्टि से कम विस्तार रखते हैं। विकासशील देशों की भाँति भारत की क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था अभी तक नगरीय क्षेत्रों की ओर झुकाव नहीं रखती है। हमारे यहाँ नगरों के पृष्ठ प्रदेश में नगरीकरण के प्रभाव को फैलाने में अभिगम्यता ने महत्त्वपूर्ण कारक के रूप में कार्य किया है। 1976 में **के० एम० कुलकर्णी** ने नासिक नगर और उसके प्रदेश का अध्ययन करते हुए नासिक नगर की संरचना और अन्तर्क्रियाओं पर प्रकाश डाला है।

हैदराबाद का उपान्त (Hyderabad Metropolitan Fringe)—1978 में **के० एन० गोपी** ने 'Process of Urban Fringe Development : A Model' नामक पुस्तक में हैदराबाद महानगर की उपान्त पेटी का अध्ययन प्रस्तुत किया है। यह पेटी उपनगरीय विशेषताएँ रखती है। नगरीय कार्य, नगरीय मान और नगरीय भूमि उपयोग की विशेषताएँ उपान्त बस्तियों में पाई जाती हैं। इस बात को ध्यान में रखकर उप्पल गाँव का विस्तृत अध्ययन किया है। यह एक नगरीकृत गाँव है और उपनगरीकरण की प्राकृतिक प्रक्रिया से गुजर रहा है। ऐसी बात इसके आर्थिक कार्यकलाप, स्वरूपीय विशेषता और जनांकिकी संरचना से पता लगती है।

1979 में **एस० एस० ए० जाफरी** और **आर० साहु** ने शिलांग नगर की उपान्त पेटी का अध्ययन किया और बताया कि व्यावसायिक, जनांकिकी सामाजिक अवधारक व विकास के

18. 'It is a twilight zone between the countryside and the city'.

Scanned with CamScanner

स्तर के आधार पर शिलांग नगर समयकालिक और स्थानिक दोनों दृष्टि से बढ़ रहा है। शिलांग से गोहाटी की ओर जाने वाली सड़क पर उपान्त का विकास तेजी से हो रहा है।

1980 में **सी० डी० देशपाण्डे, बी० अरुणाचम** और **एल० एस० भट्ट** ने एक पुस्तक 'Impact of a Metropolitan City on the Surrounding Region' लिखी है। इसमें उन्होंने नगरीय प्रभाव के कटिबन्धों का स्थानिक प्रतिरूप प्रस्तुत किया है। दक्षिणी कोंकन उनके अध्ययन का क्षेत्र है। यह क्षेत्र, जिस पर नगर का अपना विस्तार नगरीय विकास व छितराव के कारण होता है, एक अलग विशिष्टता रखने वाला होता है, जिससे ग्रामीण-नगरीय उपान्त की संकल्पना का बोध होता है। यह क्षेत्र आंशिक रूप से नगरीय क्षेत्र के साथ घुल-मिल जाता है और आंशिक रूप से ग्रामीण विशेषता लिये होता है। यहाँ के निवासी आर्थिक व सामाजिक दृष्टि से स्थानीय लोगों से भिन्नता रखते हैं। यहाँ पर भूमि उपयोग साहचर्य रूप में मिलता है। यह वह क्षेत्र है जहाँ नगरीकरण ग्रामीणता का अतिक्रमण करता है। ग्रामीण-नगरीय सात्यतता को यहाँ प्रभावी रूप में देखा जा सकता है।

1980 में **एम० एम० पी० सिन्हा** ने पटना नगर की उपांत पेटी का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार उपान्त की आकृति प्रत्येक नगर में अलग-अलग होती है। इस पर नगर के भौतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक व्यक्तित्व का प्रभाव पड़ता है। इसकी आकृति सुविधाओं में परिवर्तन के साथ-साथ बदलती रहती है। यह एक प्रक्रिया है, जो समीपवर्ती देहात क्षेत्र को नगरीय इकाइयों में बदलने में सहायक होती है। उपान्त पेटी अपकेन्द्रीय शक्तियों का परिणाम है, जबकि नगर का केन्द्रीय व्यापार क्षेत्र अभिकेन्द्रीय शक्ति का परिणाम होता है।[19] ग्रामीण-नगरीय उपान्त नगरीय परिवर्तनों का एक माध्यम है। जैसे-जैसे नगर अपना विस्तार करते है, वैसे-वैसे यह गतिशील होता जाता है। ग्रामीण क्षेत्र धीरे-धीरे ग्रामीण नगरीय उपान्त में बदल जाता है और समय के साथ नगरीय केन्द्र में समाहित हो जाता है।

पटना नगर की उपान्त पेटी पर प्रभाव को भूमि उपयोग, कृषि करने के तरीके व पद्धति, भूमि-कीमत द्वारा आँका जा सकता है। इसके साथ-साथ अकृषित कार्यकर्ता, जनसंख्या का घनत्व, उपयोगी सेवाएँ, प्राथमिक कार्यकलाप, भोजन की आदतें और चिकित्सा सुविधाओं द्वारा भी पटना का प्रभाव मापा जा सकता है।

1982 में उत्तर भारत में भूगोल पत्रिका में प्रकाशित एक लेख में **वी० एस० फड़के** एवं **के० सीता** ने बम्बई के देहाती उपान्त की आर्थिक विशेषताओं पर प्रकाश डाला है। उनका अध्ययन उपान्त क्षेत्र की कुछ चुनी गई बस्तियों, जिनको टोहकर चुना गया है, के प्राथमिक आँकड़ों पर आधारित है। इसी पत्रिका में **वी० पी० राव** ने जर्मनी के नगरों में उपान्त की विशेषताओं पर एक लेख लिखा है। उन्होंने उल्फसवर्ग और मार्लह्यूल नगरों को अध्ययन के लिए चुना है। नगर उपान्त का उद्‌भव और विकास आधुनिक नगरीय विकास की एक विशेष

Scanned with CamScanner

प्रवृत्ति का परिचायक है। उनके अनुसार उल्फसवर्ग एक औद्योगिक नगर के कारण अपने उपान्त का विकास कर पाया है। यह नगर से 20 से 30 किमी० की परिधि में फैला है। यहाँ पर नगर में काम करने वाली जनसंख्या बड़ी संख्या में निवास करती है। यहाँ पर रहने वाले लोग नगर की भीड़भाड़ से बचने के लिए दैनिक यात्रा करते हैं, और यहाँ पर नगर की अपेक्षा अधिक आवासीय सुविधाएँ पाते हैं। उल्फसवर्ग की तुलना में मार्लह्यूल भिन्न स्वरूप प्रकट करता है। यह कोयला उत्खनन नगर है। यह अपने उपान्तीय ग्रामों को अधिक प्रभावित नहीं कर पाया है। इसका उपान्त बहुत सीमित है।

दिल्ली महानगर का ग्रामीण-नगरीय उपान्त (Delhi Rural-Urban fringe)

डॉ० एस० के नांगिया[20] ने अपनी पुस्तक 'Delhi Metropolitan Region : A Study in Settlement Geography' में दिल्ली महानगर की उपान्त पर अपने महत्त्वपूर्ण विचार प्रकट किये हैं। उनके अनुसार दिल्ली महानगर का उपान्त 350 वर्ग किमी० क्षेत्र पर फैला है। इसमें 177 बस्तियाँ स्थित मिलती हैं। यह पेटी एक संकेन्द्रीय कटिबन्ध के रूप में नहीं है बल्कि इसकी आकृति बहुभुजी (Polygonal) है। इसका विस्तार नगर से 10 से 30 किमी० की दूरी तक के क्षेत्रफल पर मिलता है। पश्चिमी भाग में इसकी सीमा 15 किमी० की दूरी तक फैली है जबकि पूर्वी भाग में यह 30 किमी० की दूरी तक अपना प्रभाव रखती है। गाजियाबाद की ओर यह अधिक लम्बाई में फैली है जैसा कि मानचित्र से भी स्पष्ट होता है। पूर्वी-दक्षिण-पूर्वी तथा उत्तरी भागों में इसका विस्तार 15 किमी० की दूरी तक फैले क्षेत्र पर मिलता है। उत्तरी, उत्तरी-पश्चिमी भाग में सोनीपत की ओर तथा दक्षिणी-पूर्वी भाग में फरीदाबाद की ओर इसका विस्तार अधिक मिलता है। वास्तव में संक्रमण पेटी का विस्तार यातायात मार्गों के सहारे अधिक है। मार्गों के बीच फैली भूमि पर अधिक बाहर की ओर नहीं फैली है। अतः स्पष्ट है कि इसको बनाने में यातायात-मार्गों का योगदान अधिक है।

यातायात-मार्गों के साथ-साथ इस प्रदेश की धरातलीय दशा ने भी ग्रामीण नगरीय उपान्त के रूप व उसके विस्तार पर प्रभाव डाला है। पूर्वी भाग में यमुना नदी के निकट निचले व बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का होना, दक्षिण भाग में पथरीला धरातल, पश्चिमी व दक्षिणी भाग में रेतीले टीले, साल्ट पान्स, ऊँचा-नीचा धरातल तथा पानी की कमी आदि विषमताओं के कारण इन भागों में उपान्त पेटी का विस्तार कम हो पाया है। इस उपान्त का विकास गाजियाबाद, फरीदाबाद, सोनीपत की ओर जाने वाले मार्गों की ओर अधिक हुआ है, क्योंकि यही क्षेत्र इसके विकास के अधिक अनुकूल है।

दिल्ली उपान्त की विशेषताएँ—यह पेटी उद्योगों का जमाव रखती है। महानगर की जनसंख्या के दबाव के कारण अनेक उद्योग इस बाहरी सीमावर्ती क्षेत्र में आकर बस गये हैं। नजफगढ़, आजादपुर, ओखला और शाहदरा औद्योगिक इकाईयों के रूप में इस पेटी में विकसित

---

20. **S. Nangia**, *Delhi Metropolitan Region : A Study in Settlement Geography*, Delhi 1976.

Scanned with CamScanner

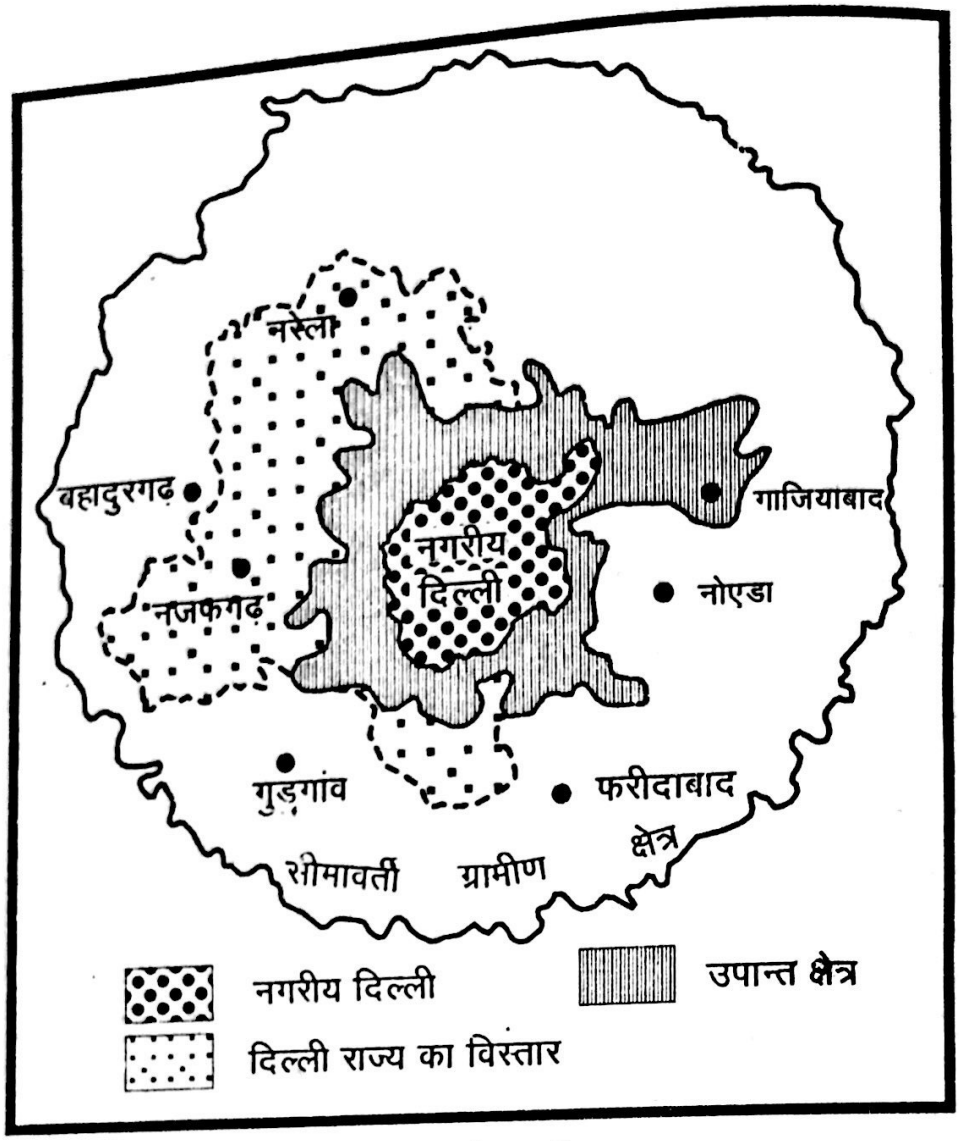

चित्र 19.3 : दिल्ली : नगरीय-ग्रामीण उपान्त

हो गये हैं। पालम व पसोंदा (गाजियाबाद के निकट) हवाई अड्डे इस उपान्त पेटी में पाये जाते हैं। सीवरेज प्लांट और पम्पिंग स्टेशन महानगर के चारों ओर फैली इस उपान्त पेटी में स्थित मिलते हैं। बादली में सीवरेज पम्पिंग ग्राउण्ड स्थित है। ओखला में सीवरेज फार्म व ट्रीटमेन्ट प्लांट स्थित हैं। यह दोनों बस्तियाँ इस उपान्त पेटी में अपना विस्तार रखती हैं। इस पेटी में स्थित खुले मैदान मनोरंजन स्थल के रूप में अपना विस्तार रखते हैं। यहाँ ओखला और महरौली प्रमुख मनोरंजन स्थल के रूप में हैं।

दिल्ली महानगर की 1981 की प्रस्तावित सीमा पर हरी पेटी का विकास किया गया है। यह हरी पेटी वर्तमान में ग्रामीण-नगरीय उपान्त पेटी पर अपना विस्तार रखती है। इस पेटी में पार्क, मनोरंजन स्थल और मरघट पाये जाते हैं। यह हरी पेटी वास्तव में नगरीय प्रसार से पीड़ित कृषि-भूमि का एक निश्चित सीमा तक उपयोग करने की ओर संकेत करती है। रेलवे के दो महत्त्वपूर्ण बड़े-बड़े यार्ड गाजियाबाद और तुगलकाबाद इस उपान्त पेटी में अपनी स्थिति रखते हैं।

Scanned with CamScanner

पिछले सौ वर्षों में दिल्ली महानगर ने अपनी सीमा में 111 गाँवों को शामिल किया है। 1951 के बाद से शामिल किये गये गाँवों की संख्या में भारी वृद्धि हुई है। लगभग 75 गाँव इस दौरान प्रभावित हुए हैं। इन गाँवों के भूमि उपयोग, जनसंख्या सम्बन्धी विशेषता, उनकी व्यावसायिक संरचना में भारी परिवर्तन हो रहा है। इनमें अनेक गाँवों की भूमि का दिल्ली विकास प्राधिकरण ने पूर्णतया अधिग्रहण कर लिया है तथा उन पर रिहाइशी कालोनियाँ व अन्य नगरीय कार्यों का विस्तार किया है।

पी० सी० जैन ने अपने एक अध्ययन में बताया है कि देश के कुछ प्राचीन नगरों में उपान्त पेटी नगर की चहारदीवारी से प्रारम्भ होती है। सत्रहवीं शताब्दी में शाहजहाँ ने पुरानी दिल्ली को चहारदीवारी में विकसित किया था, तथा नगर अपनी उपान्त पेटी इस चहारदीवारी के बाहर रखता था। बाद में यह दीवार उपान्त पेटी के रूप में नहीं रह सकी। ब्रिटिश काल में नई दिल्ली की स्थापना, नगर का पूर्वी व दक्षिणी-पश्चिमी दिशाओं में विस्तार आदि बातों ने इस उपान्त पेटी को नगर की सीमा में शामिल कर लिया। नगर के विस्तार के साथ अनेक गाँवों का अस्तित्व समाप्त हो गया और उनके स्थान पर नई रिहाइशी बस्तियाँ स्थापित हो गईं। रायसीना गाँव को पूरी तरह उजाड़ कर वहाँ पर राष्ट्रपति भवन व राजपथ का निर्माण किया गया। निजामुद्दीन, गढ़ी जमरूदपुर, हौसरानी और बेगमपुर गाँवों को उजाड़कर लाजपतनगर, कालकाजी और मालवीयनगर नामक रिहायशी कालोनियाँ बसाई गयीं। शादीपुर, बसाई दरापुर, तातारपुर और खानपुर टाया गाँवों की कृषि भूमि पर पश्चिमी दिल्ली की कालोनियाँ को बसाया गया। किंग्सवे कैम्प व गाँधीनगर क्रमशः ढाका, गौंधली एवं सीलमपुर गाँवों की भूमि पर बसाये गये।

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि दिल्ली महानगर के विस्तार के साथ-साथ ग्रामीण-नगरीय उपान्त, किस प्रकार उसकी बाहरी सीमा की ओर सरकती है। नगर के विस्तार करने पर यह पेटी अधिक नगरीकृत होती जा रही है। यह पेटी नगर से घनिष्ठ सम्बन्ध बनाये हुए है। परिवहन मार्गों का इस दिशा में विशेष योगदान है। नगर के अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य इस पेटी में स्थित मिलते हैं जिनमें डाक एवं तार-सेवाओं के उपकेन्द्र, यातायात एवं संचार केन्द्र तथा दुग्ध शीतन केन्द्र उल्लेखनीय हैं। इस प्रकार यह पेटी अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा नगर से बहुत ही अधिक गहन सम्बन्ध रखती है।

डॉ० नांगिया ने इस पेटी में स्थित ग्रामीण बस्तियों का भी गहन अध्ययन किया है। उन्होंने अपने अध्ययन में 1961 की जनगणना के आँकड़ों को आधार मानकर बस्तियों के वितरण व उनके प्रारूप की विभिन्नताओं का विश्लेषण किया है। इस पेटी में बस्तियों का घनत्व 83.9 बस्ती प्रति 100 वर्ग मील पाया जाता है। यह घनत्व नगर की अन्य पेटियों में सबसे अधिक है। यहाँ पर प्रति बस्ती की औसत जनसंख्या 1338 है। जनसंख्या में वृद्धि की दर 49 प्रतिशत मिलती है। 1951-61 के दशक में इस पेटी की बीस बस्तियों ने जनसंख्या में कमी को अंकित किया है। इस उपान्त पेटी में कृषि कार्यों का प्राधान्य है। इसके बाद सेवा व व्यापार कार्यों का स्थान आता है। यहाँ के कुल कार्यकर्ताओं का 45 प्रतिशत कृषि कार्यों

Scanned with CamScanner

में, 35 प्रतिशत व्यापार व सेवा कार्यों में तथा 20 प्रतिशत उद्योग कार्यों में लगा है। जनसंख्या का औसत घनत्व 1217 व्यक्ति प्रति वर्ग मील पाया जाता है तथा 1000 पुरुषों के पीछे 835 महिलाएँ पाई जाती हैं।

डॉ० नांगिया के अनुसार, महानगर दिल्ली की उपान्त पेटी देश के नगरों की उपान्त पेटी की भाँति भूमि-उपयोग के प्रकारों का समूह है। यहाँ पर नगरीय गाँव जनसंख्या का ऊँचा घनत्व रखते हैं। क्योंकि आव्रजकों को कम किराये पर नगर से नजदीक ही रिहाइशी सुविधा मिल जाती है।

बरेली महानगर का उपान्त—हीरालाल ने अपने एक अध्ययन में ग्रामीण नगरीय उपान्त की विशेषताओं को बताते हुए उसके सीमांकन पर प्रकाश डाला है। अभिवृद्धि की वह प्रक्रिया, जो नगर के बाह्य भाग में घटित होती है, ग्रामीण और नगरीय भू-दृश्य के बीच में एक संक्रमण क्षेत्र बना लेती है, जिसे ग्रामीण-नगरीय उपान्त कहते हैं।[21] भारतीय नगरों में इनका सीमांकन निम्न बातों को आधार मानकर किया जा सकता है– भूमि उपयोग अन्तर्वाह (influx), मिश्रित नगरीय-ग्रामीण कार्य, मुख्य नगर से उसका कार्यात्मक सम्बन्ध, सामाजिक-आर्थिक विकास, नगरीय सुविधाओं की उपलब्धता, अकृषित जनसंख्या का अनुपात। नगर के सीमावर्ती क्षेत्र के वर्तमान भूमि उपयोग, परिवहन सुविधाएँ तथा जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना के अलग-अलग मानचित्र एक ही मापक पर बने हों, तो इन मानचित्रों को एक-दूसरे पर आध्यारोपित करके नगरीय उपान्त का सीमांकन किया जा सकता है। क्षेत्रीय सर्वेक्षण द्वारा इस उपान्त के धरातलीय विस्तार को पहचाना जा सकता है।

उन्होंने बरेली का सीमांकन करने में तीन तरह के निर्धारकों (determinants) को चुना है—(1) स्थानिक निर्धारक (Spatial)–नगर के भावी विस्तार का क्षेत्र, (2) व्यावसायिक निर्धारक (Occupational)–अकृषित कार्यकर्ताओं का अनुपात, (3) जनांकिकी निर्धारक (Demographic) जनसंख्या का घनत्व, घनत्व में परिवर्तन की दर, जनसंख्या वृद्धि, पुरुष-महिला संघटन, साक्षरता। इन सब निर्धारकों के आधार पर विभिन्न मानचित्र बनाए गए हैं, तथा उनको एक-दूसरे पर अध्यारोपित करके बरेली नगर की उपान्त पेटी चित्रित की गई है। पेटी के दो कटिबन्ध दिखाई पड़ते हैं। वैसे वे सभी गाँव इन निर्धारकों में से किन्हीं तीन को पूरा करते हैं तथा नगर से सतत् रूप में फैले हैं, नगर का नगरीय उपान्त बनाते हैं (चित्र 19.4)।

बरेली का उपान्त 77 गाँवों पर फैला है। इसका क्षेत्रफल 134.5 वर्ग किमी० है। इसकी आकृति संकेन्द्रीय न होकर तारानुमा है। यह नगर से 3 से 10 किमी० की दूरी तक फैली है।

---

21. The process of accretion which takes place outside the city has generated a zone of transition between the rural and urban landscape properly known as the rural-urban fringe. —**Hira Lal**

Urban Fringe : 'Concepts and Delimitations, Recent trends and concepts in Geography'. Vol. III, 1980. —**R. B. Mandal & V. N. P. Sinha**

Scanned with CamScanner

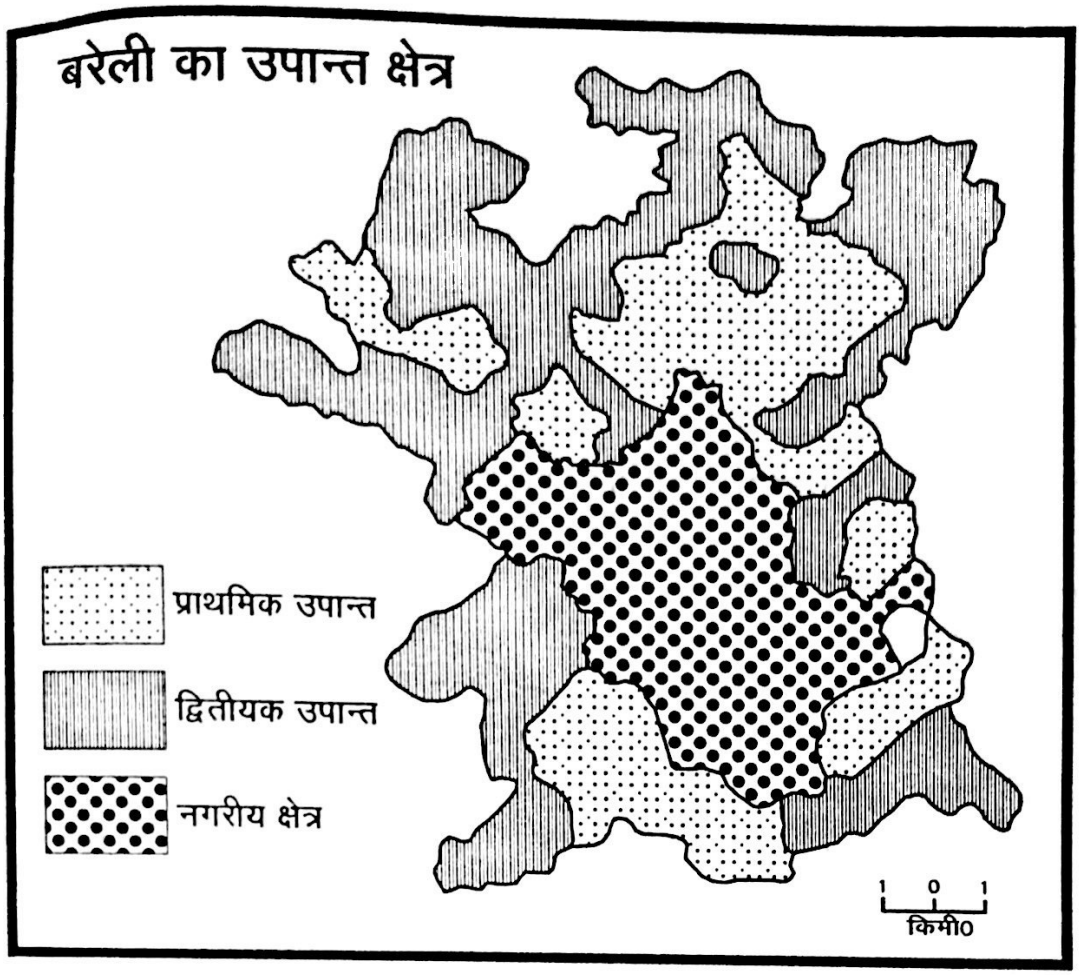

चित्र 19.4 : बरेली नगर का ग्रामीण-नगरीय उपान्त (हीरालाल के अनुसार)

इसका विस्तार यातायात मार्गों के सहारे-सहारे विशेष रूप से नगर के बाहर जाने वाले मार्गों के किनारे अधिक है तथा उनके बीच के स्थानों पर भी अधिक है। इस उपान्त को कार्यों की गहनता के आधार पर दो कटिबन्धों में रखा है—(i) प्रमुख नगरीय उपान्त, तथा (ii) गौण नगरीय उपान्त।

(i) **प्रमुख नगरीय उपान्त**—वह गाँव जो 30 प्रतिशत या उससे अधिक अकृषित कार्यकर्ता तथा चुने हुए छः निर्धारकों में से तीन की विशेषता रखते हैं। वास्तविक उपान्त बनाते हैं। यह सभी गाँव नगर की प्रशासकीय सीमा के बाहर उससे सटे हुए सतत् रूप में फैले हैं। वास्तव में यह कटिबन्ध नगर से गहन सम्बन्ध रखता है तथा नगर के भावी विकास व अस्तित्व के लिए आवश्यक है। इसमें शामिल 24 गाँव 5521 हैक्टेयर भूमि पर फैले हैं, जो उपान्त क्षेत्र का 40 प्रतिशत भाग है।

(ii) **गौण नगरीय उपान्त**—वह गाँव जो 30 प्रतिशत से कम अकृषित कार्यकर्ता तथा एक या दो निर्धारकों की विशेषता को पूरा करते हैं, उनको गौण उपान्त कहा जा सकता है। इसमें शामिल 43 गाँव 7958 हैक्टेयर भूमि पर फैले हैं, जो उपान्त क्षेत्र का 70 प्रतिशत भाग है। इस पेटी में कृषि कार्यों की प्रधानता नगरीय कार्यों की अपेक्षा अधिक मिलती है।

Scanned with CamScanner

उपान्त पेटी में शामिल 10 गाँव नगरीय गाँव के रूप में विकसित हो गए हैं। इन गाँवों का कुछ भाग नगर की प्रशासकीय सीमा में भी शामिल हो गया है। यह गाँव भौतिक, व्यावसायिक व जनांकिकी संरचना की दृष्टि से अधिक परिवर्तन अंकित कर रहे हैं।

Scanned with CamScanner